mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-165 | पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना

15 जून 2024 शनिवार

दैनिक

मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

कौन हैं दिव्या ...

@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

टला हादसा

लखनऊ-चंडीगढ़ एसप्रेस के पहिये में चिंगारी से उठा धुआं, कई यात्री चलती ट्रेन से कूदे, चोटिल

बिजनौर (एजेंसी)। लखनऊ से चलकर चंडीगढ़ जा रही एक्सप्रेस में चंदक रेलवे स्टेशन पर अचानक पहियों में चिंगारियां उठी और धुआं धुआं हो गया। पहियों से निकला धुआं कोच में भरने लगा

तो यात्रियों में आग लगने की दहशत फैल गई। घबराए यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। बताया गया कि अभी ट्रेन रुकी भी नहीं थी कि धीमी होते ही यात्री ट्रेन से कूदने लगे। ऐसे में कई यात्री चोटिल हुए हैं। ट्रेन में आग लगने की अफवाह पर अफरा तफरी का माहौल हो गया।

टीएमसी ने बंगाल में विधानसभा उपचुनाव के लिए उमीदवारों की घोषणा की

4 सीटों पर 10 जुलाई को वोटिंग

पश्चिम बंगाल (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में विधानसभा उपचुनाव के लिए तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। राज्य की चार विधानसभा सीटों पर 10 जुलाई को वोटिंग होगी। टीएमसी ने रायगंज सीट से कृष्णा कल्याणी और राणाघाट-दक्षिण निर्वाचन क्षेत्र से मुकुट मणि अधिकारी को उम्मीदवार बनाया है। पूर्व टीएमसी विधायक साधन पांडे की विधवा सुप्ति पांडे को कोलकाता की मानिकतला सीट से मैदान में उतारा गया है, जबकि मधुपर्णा ठाकुर को मटुआ बहुल बागदा सीट से उम्मीदवार बनाया गया है।

नीट पेपर लीक मामला

सुप्रीम कोर्ट का एनटीए को नोटिस

- शिक्षा मंत्री प्रधान स्टूडेंट और पेरेंट्स से मिले, बोले- कोर्ट जो भी कहेगा, हम करेंगे
- 8 जुलाई को सुनवाई होगी

नईदिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार 14 जून को नीट यूजी पेपर लीक और इसकी सीबीआई जांच की मांग वाली याचिका पर सुनवाई की। कोर्ट ने कहा कि एनटीए दो हफ्तों के अंदर इस पर अपना पक्ष रखे। इस मामले पर 8 जुलाई को अगली सुनवाई होगी।

पिटीशनर हितेश सिंह कश्यप का आरोप है कि गुजरात के गोधरा में जय जल राम परीक्षा सेंटर को

चुनने के लिए कर्नाटक, ओडिशा, झारखंड आदि राज्यों में 26 छात्रों ने 10-10 लाख रुपए घूस दी थी।

कश्यप ने कहा कि इस सेंटर पर ड्यूटी दे रहे टीचर सहित 5 लोगों को गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तार टीचर के पास से सभी 26 छात्रों की डीटेल मिली है।

शिक्षा मंत्री प्रधान बोले- कोर्ट जो भी कहेगा, हम करेंगे

शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि हमने कुछ स्टूडेंट्स को बुलाया था, उनके पेरेंट्स से भी मिला। मैंने उनको आश्वस्त किया है कि सरकार पारदर्शी प्रक्रिया के लिए प्रतिबद्ध है। 24 लाख एप्लीकेंट्स थे, 23 लाख 33 हजार विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। स्टूडेंट्स की कुछ शंकाएं सामने आई थीं। प्रधान ने कहा कि 6 सेंटरों पर गड़बड़ियों बात भी सामने आई। ग्रेस मार्क्स को लेकर भी आपत्ति आई है। कल ही सुप्रीम कोर्ट ने 1500 से ज्यादा स्टूडेंट्स को दोबारा एग्जाम देने का बोल दिया है। नीट को लेकर सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट्स में 41 पिटीशन लगी हैं।

आरोपी का कबूलनामा ,हमें हू-ब-हू पेपर मिला था, बिहार में 19 गिरफ्तार; केंद्र ने कहा- पेपर लीक के सबूत नहीं

नीट परीक्षा में किसी प्रकार की धांधली, भ्रष्टाचार या पेपर लीक का कोई भी पुख्ता सबूत अभी तक सामने नहीं आया है। पेपर कहीं भी लीक नहीं हुआ है। एनटीए में भ्रष्टाचार का सवाल ही नहीं उठता। यह बहुत विश्वसनीय निकाय है। पटना के लर्न हॉस्टल में मुझे 4 मई को ले जाया गया। मुझे प्रश्न पत्र उत्तर सहित दिया गया और याद करने के लिए कहा गया था। आज की परीक्षा में सभी प्रश्न शत-प्रतिशत मिले थे। मेरे साथ वहां 20-25 परीक्षार्थी भी मौजूद थे। उनको भी प्रश्न पत्र उत्तर सहित दिया गया और रटाया गया।

सिक्किम में लैंडस्लाइड से 6 की मौत, कई लापता

पर्यटन स्थलों पर 2 हजार से ज्यादा लोग फंसे
12 राज्यों में हीटवेव का अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के उत्तरी राज्यों में हीटवेव और तेज गर्मी का दौर लगातार जारी है। दूसरी ओर नॉर्थ-ईस्ट में भारी बारिश देखने को मिल रही है। पिछले तीन दिन से जारी बारिश के चलते सिक्किम में अब तक 6 लोगों की मौत हो चुकी है। जगह-जगह लैंडस्लाइड और बाढ़ में सैकड़ों घर और कई सड़कें बह गईं।

- आंध्र प्रदेश में मिनी ट्रक और कंटेनर लॉरी की टक्कर में 6 लोगों की मौत

नईदिल्ली (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में शुक्रवार (14 जून) को एक मिनी ट्रक ने कंटेनर लॉरी को टक्कर मार दी। इस हादसे में 6 लोगों की मौत की खबर है। डीएसपी सुभानी ने बताया कि मिनी ट्रक लकड़ी लदे एक ट्रैक्टर को ओवरटेक करते समय कंटेनर लॉरी से टकरा गया। पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक अन्य की अस्पताल ले जाते समय मौत हो गई।

जी7 समिट में मेलोनी से मिले मोदी

दोनों ने हाथ जोड़कर नमस्ते किया

- पीएम मोदी कैथोलिक चर्च के प्रमुख पोप फ्रांसिस से मिले
- गर्भपात पर मैक्रों से इटली की पीएम मेलोनी की हुई बहस

रोम (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 50वें जी7 समिट के लिए इटली में हैं। पीएम ने शुक्रवार को इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी से मुलाकात की। इस दौरान दोनों नेताओं ने एक-दूसरे को हाथ जोड़कर नमस्ते किया।

जी7 के मंच पर मैक्रों और मेलोनी के बीच हुई बहस- जी7 में फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और इटली की पीएम जॉर्जिया मेलोनी के बीच बहस हो गई। दरअसल, मैक्रों ने जी7 के जॉइंट स्टेटमेंट में गर्भपात के अधिकार का मुद्दा उठाने की मांग की। लेकिन मेलोनी ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि मैक्रों जी7 को चुनावी राजनीति का मंच न बनाएं।

पीएम मोदी बोले- बातचीत से निकालें रूस-यूक्रेन जंग का हल- रूस-यूक्रेन जंग के बीच पीएम मोदी ने जी7

समिट के बीच यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की से मुलाकात की है। पीएम मोदी ने उन्हें गले भी लगाया। इसके बाद दोनों नेताओं के बीच द्विपक्षीय बैठक हुई। इस दौरान पीएम मोदी ने जंग पर भारत के रुख को दोहराया। उन्होंने कहा है कि किसी भी विवाद का समाधान कूटनीति और बातचीत के जरिए ही निकाला जा सकता है।

नमस्ते इटली- जी7 में 'नमस्ते' से मेहमानों का वेलकम कर जार्जिया मेलोनी ने जीता दिल- इटली में हो रहे ग्लोबल साउथ के जी-7 शिखर सम्मेलन में भारत, अमेरिका, कनाडा समेत कई देशों के प्रमुख पहुंचे है। इटली की पीएम जार्जिया मेलोनी ने काफी गर्मजोशी से सभी मेहमानों का स्वागत किया है। इस दौरान मेलोनी ने कई मेहमानों का स्वागत हाथ जोड़कर नमस्ते करते हुए किया।

म.प्र.मंदिर में गोवंश का सिर फेंकने वालों के घर ढहाए

- पुलिस ने भीड़ पर छोड़े आंसू गैस के गोले; लोगों ने थाना घेरा

बोले-आरोपियों का जुलूस निकालो

रतलाम (म.प्र.) (एजेंसी)। रतलाम के जावरा के जागनाथ मंदिर परिसर में गोवंश का कटा सिर मिला है। शुक्रवार तड़के पुजारी मंदिर पहुंचे तो सिर देखकर लोगों व पुलिस

को सूचना दी। इस घटना से नाराज हिंदू संगठनों ने जावरा को शांतिपूर्ण ढंग से बंद कराया। इसके बाद फोरलेन पर चक्काजाम कर दिया। शहर में भारी पुलिस बल तैनात था।

वडोदरा में मुस्लिम महिला को फ्लैट दिए जाने का विरोध

- लोग बोले- सोसायटी में 461 हिन्दू परिवार रहते हैं, दूसरे धर्म के लोग स्वीकार नहीं

वडोदरा (एजेंसी)। गुजरात के वडोदरा शहर स्थित हरणी के एक रेसिडेंशियल कॉम्प्लेक्स में लोगों ने मुस्लिम महिला को फ्लैट देने का विरोध किया है। मामला मोटनाथ रेजीडेंसी कोऑपरेटिव हाउसिंग सर्विसेज सोसाइटी लिमिटेड का है। यहां रहने वाले 33 लोगों ने कलेक्टर को आवेदन देकर महिला का अलोटमेंट कैंसल करने की मांग की है।

दरअसल, वडोदरा म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन ने हरणी में मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत 2017 में 462 फ्लैट्स बनाए थे। इनमें 461 फ्लैट में हिन्दू परिवार रहते हैं। 44 साल की मुस्लिम महिला कौशल विकास विभाग में काम करती है। वह अकेली मुस्लिम है, जिसे सोसायटी में फ्लैट मिला है।

सोसायटी वालों के कहा है कि हरणी हिंदुओं का इलाका है। यहां लगभग चार किलोमीटर के दायरे में मुस्लिमों की एक भी बस्ती नहीं है। ऐसे में अगर किसी मुस्लिम महिला को यहां घर दिया गया, तो यह हमारी जिंदगी में आग लगाने जैसा होगा।

राम मंदिर को उड़ाने की धमकी के बाद बढ़ाई गई अयोध्या की सुरक्षा

एसएसपी ने किया निरीक्षण

अयोध्या (एजेंसी)। आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद की ओर से राम मंदिर को उड़ाने की धमकी दिए जाने के बाद अयोध्या अलर्ट मोड पर आ गई है। राम मंदिर में निगरानी बढ़ा दी गई है। राम मंदिर समेत महत्वपूर्ण स्थलों की सुरक्षा को लेकर विशेष सतर्कता बरती जा रही है। महर्षि वाल्मीकि एयरपोर्ट की भी सुरक्षा में इजाफा किया गया है। एसएसपी राजकरण नय्यर ने शुक्रवार को महर्षि वाल्मीकि एयरपोर्ट पहुंचकर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि अयोध्या धाम की सुरक्षा पहले से ही कड़ी है। यहां की सुरक्षा व्यवस्था को विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित करते हुए सीनियर राजपत्रित अधिकारी के नेतृत्व में टीमों का गठन किया गया है। विभिन्न जोन में सुरक्षाकर्मी पहले से ही तैनात हैं। जिला पुलिस के अलावा पीएसी की भी कई कंपनियां प्राप्त हुई हैं। पीएसी को लगाकर सुरक्षा की जा रही है। महत्वपूर्ण स्थलों की भी सुरक्षा व्यवस्था की निगरानी 24 घंटे की जाती है।

कश्मीर के गंदेरबल में खीर भवानी मेला शुरू, पूरे जिले में सुरक्षा बढ़ाई गई

श्रीनगर (एजेंसी)। कश्मीर के गंदेरबल जिले के तुलमुल्ला में खीर भवानी मेला शुरू हो गया है। बड़ी तादाद में कश्मीरी पंडित मेले में शामिल होने के लिए पहुंच रहे हैं। इसको ध्यान

में रखते हुए सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। मंदिर के आसपास सहित पूरे जिले में सुरक्षाबलों की तैनाती है। खीर भवानी मंदिर को कश्मीर के हिंदू-मुस्लिम भाईचारे का प्रतीक भी माना जाता है। मंदिर परिसर के आसपास रहने वाले स्थानीय मुसलमान कश्मीरी पंडित भक्तों के आगमन पर उन्हें मिट्टी के बर्तनों में दूध परोसते हैं।

आम आदमी को लगा झटका !

- थोक महंगाई में हुआ इजाफा, 15 महीनों में सबसे ज्यादा बढ़ी
- खाने-पीने की चीजों के दाम बढ़े

नई दिल्ली (एजेंसी)। मई में थोक महंगाई बढ़कर 15 महीनों के ऊपरी स्तर पर पहुंच गई है। आज यानी 14 जून को जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार मई में थोक महंगाई बढ़कर 2.61 प्रतिशत पर पहुंच गई है। फरवरी 2023 में थोक महंगाई दर 3.85 प्रतिशत रही थी।

वहीं अप्रैल 2024 में महंगाई 1.26 प्रतिशत रही थी, जो 13 महीने का उच्चतम स्तर था। इससे एक महीने पहले मार्च 2024 में ये 0.53 प्रतिशत रही थी। फरवरी में थोक महंगाई 0.20 प्रतिशत रही थी। उधर, बुधवार को रिटेल महंगाई में गिरावट देखने को मिली थी।

मई में खाद्य महंगाई दर 1.88 प्रतिशत बढ़ी

- खाद्य महंगाई दर अप्रैल के मुकाबले 5.52 प्रतिशत से बढ़कर 7.40 प्रतिशत हो गई।
- रोजाना की जरूरत वाले सामानों की महंगाई दर 5.01 प्रतिशत से बढ़कर 7.20 प्रतिशत हो गई।
- फ्यूल और पावर की थोक महंगाई दर 1.38 प्रतिशत से घटकर 1.35 प्रतिशत रही।
- मैन्युफैक्चरिंग प्रोडक्ट्स की थोक महंगाई दर -0.42 प्रतिशत से बढ़कर 0.78 प्रतिशत रही।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य इंद्रेश बोले-

अहंकार ने भाजपा को 241 पर रोका

राम सबके साथ न्याय करते हैं, पार्टी ने घमंड किया तो उसे पूरी ताकत नहीं दी

जयपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इंद्रेश कुमार के भाजपा को लेकर दिए बयान पर विवाद शुरू हो गया है। इंद्रेश कुमार ने कहा था कि अहंकार ने भाजपा को 241 पर रोक दिया। इस बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के सहयोगी दल के नेता और केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने कहा कि उन्हें इसमें खुश रहने दें। राम ने हमें काम करने के लिए बहुमत दिया है।

इससे पहले इंद्रेश कुमार ने कहा- राम सबके साथ न्याय करते हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव को ही देख लीजिए।

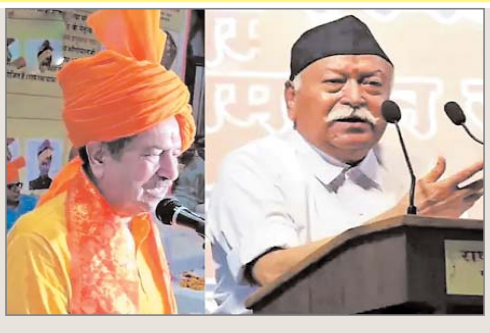

जिन्होंने राम की भक्ति की, लेकिन उनमें धीरे-धीरे अहंकार आ गया। उस पार्टी को सबसे बड़ी पार्टी घोषित कर दिया। उनको जो पूर्ण हक मिलना चाहिए, जो शक्ति मिलनी चाहिए, वो भगवान ने अहंकार के कारण रोक दी।

इंद्रेश कुमार जयपुर के पास कानोता में रामरथ अयोध्या यात्रा दर्शन पूजन समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने आगे कहा, जिन्होंने राम का विरोध किया, उन्हें बिल्कुल भी शक्ति नहीं दी, उनमें से किसी को भी शक्ति नहीं दी। सब मिलकर (इंडिया ब्लॉक) भी नंबर-1 नहीं बने, नंबर-2 पर खड़े रह गए। इसलिए प्रभु का न्याय विचित्र नहीं है, सत्य है, बड़ा आनंददायक है।

राम-सीता के परित्याग से दी भाजपा को नसीहत

इंद्रेश कुमार ने राम की ओर से सीता का परित्याग करने के पीछे भी नई कहानी बताते हुए भाजपा को नसीहत दी। उन्होंने कहा राम हर 100 साल में अपने राज्य में अश्वमेघ यज्ञ करते थे, ताकि उनके राज्य में कोई भूखा न रहे, कोई वंचित न रहे, कोई शिक्षा के बिना न रहे, कोई दुखी न रहे। राम का जितना बड़ा राज्य था, आज तक किसी का नहीं हुआ।

इंद्रेश कुमार ने कहा- अंत में एक समय आता है तो मां सीता ने आकर कहा कि तुम्हारे राज्य में लोगों को यह शक होने लगा है कि तुम भोग विलास में तो नहीं लग जाओगे। अपने रिश्तेदारों में और भाइयों के हितों में तो नहीं उलझ जाओगे। आपके अंदर भी सत्ता का अहंकार तो नहीं आ जाएगा, जब यह चर्चा सीता ने की तो राम ने पूछा कि करना क्या है, तो राम ने सीता से पूछा कि मुझे किस चीज का परित्याग करना है।

सीता ने कहा कि आपकी प्रियतम कौन है। उस प्रियतम का आप त्याग कीजिए। दुनिया आपको हमेशा के लिए उदाहरण मानकर आपका सम्मान करेगी। इसलिए राम ने चर्चा करके ही सीता के त्याग की परिकल्पना की थी। यह तय हुआ कि जब तक सीता वनवास में रहेंगी तो हनुमान जी उनके सेवक और दूत बनकर उनके पास रहेंगे।

संक्षिप्त समाचार

एकलव्य, विक्रम, विश्वामित्र, प्रभाष जोशी एवं लाइफ-टाइम एचीवमेंट पुरस्कार के लिये आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा म.प्र. खेल पुरस्कार-2024 अंतर्गत एकलव्य, विक्रम, विश्वामित्र, प्रभाष जोशी एवं लाइफ-टाइम एचीवमेंट पुरस्कार के लिये ऑनलाइन आवेदन 15 जून से 31 जुलाई, 2024 तक आमंत्रित किये जा रहे हैं। खेल और युवा कल्याण के नवीन पुरस्कार नियम-2021'' के अनुसार विगत 5 वर्षों (एक अप्रैल, 2019 से 31 मार्च, 2024) में अर्जित खेल उपलब्धियों के आधार पर पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। साहसिक खेल- समुद्र, जमीन एवं वायु आधारित खेल के लिये भी विक्रम एवं एकलव्य पुरस्कार के लिये आवेदन आमंत्रित किये जा रहे हैं। पुरस्कार के लिये पात्रता, पुरस्कार राशि एवं अन्य शर्तें विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदन विभागीय वेबसाइट पर दी गई लिंक से तथा प्ले-स्टोर से खेल और युवा कल्याण एप डाउनलोड करके भी ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। ऑनलाइन आवेदन करने के बाद आवेदन की प्रति (जिस पर पंजीयन क्रमांक अंकित हो) के साथ खेल प्रमाण-पत्र एवं अन्य अभिलेख की छायाप्रति संबंधित जिले के जिला खेल और युवा कल्याण कार्यालय या फिर संचालनालय खेल और युवा कल्याण, टी.टी. नगर स्टेडियम भोपाल में 31 जुलाई, 2024 तक जमा करना अनिवार्य होगा। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन-पत्र खेल पुरस्कार के लिये मान्य नहीं किये जायेंगे। अधिक जानकारी के लिये आवेदक संचालनालय खेल और युवा कल्याण, तात्याटोपे स्टेडियम और निकटतम जिला खेल और युवा कल्याण कार्यालय में सम्पर्क कर सकते हैं।

कृषि मंत्री से सामाजिक न्याय मंत्री ने की सौजन्य मुलाकात

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। किसान कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री श्री ऐदल सिंह कंषाना से गुरुवार शाम को भोपाल निवास पर सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण, उद्यानिकी तथा खाद्य प्र-संस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने सौजन्य मुलाकात की। दोनों ही मंत्रियों ने प्रदेश के विकास के लिए विभिन्न विषयों पर चर्चा की। कृषि मंत्री श्री कंषाना से सेवढ़ा विधायक श्री प्रदीप अग्रवाल, कालापीपल विधायक श्री घनश्याम चंद्रवंशी और मुरैना के पूर्व विधायक श्री राकेश मवई ने भी मुलाकात की।

मानसून पूर्व तैयारियों को लेकर सीएमएचओ ने स्वास्थ्य संस्थाओं को जारी किए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। बारिश के मौसम में पानी के भराव के कारण जल जनित और मौसमी बीमारियों के नियंत्रण के लिए सीएमएचओ डॉ. प्रभाकर तिवारी द्वारा स्वास्थ्य संस्थाओं को आवश्यक तैयारियों के संबंध में निर्देश जारी किए गए हैं। जिसमें स्वास्थ्य संस्थाओं में आवश्यक औषधियों की उपलब्धता, वैक्टर बोर्न बीमारियों की आशंका वाले क्षेत्रों का चिन्हांकन, अस्पतालों में बिस्तरों और उपकरणों की व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने के लिए निर्देशित किया गया है। इस संबंध में अपर मुख्य सचिव, लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा सभी जिला कलेक्टर, क्षेत्रीय स्वास्थ्य संचालकों, सीएमएचओ एवं सिविल सर्जन को बाढ़ एवं अतिवृष्टि की स्थिति से निपटने के लिए निर्देश जारी किए गए थे। स्वास्थ्य संस्थाओं को जारी निर्देशों में कहा गया है कि छत पर पानी इकट्ठा होने के कारण सीपेज की स्थिति ना बने, इसके लिए बारिश के पहले स्वास्थ्य संस्थाओं की छतों एवं आउटलेट की सफाई कर ली जाए। आवश्यक होने पर वॉटरप्रूफिंग और बारिश के पानी को संधारित करने के लिए वाटर हार्वेस्टिंग की जाए। इस मौसम में सर्पदंश की संभावना बढ़ जाती है इसलिए एंटी स्नेक वीनम सभी स्वास्थ्य संस्थानों में उपलब्ध रहे। यदि रोगी को आपातकालीन स्थितियों में रेफर किया जाना आवश्यक हो तो उपचार देकर ही भेजा जाए। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी ने बताया कि बारिश के मौसम में गैस्ट्रोएंटराइटिस, कॉलरा, डायरिया, पेचिश, टाइफाइड, एमेबियासिस, हेपेटाइटिस, जियार्डियासिस, स्केबीज, कृमि संक्रमण के साथ साथ मलेरिया, डेंगू, फाइलेरिया, चिकनगुनिया आदि की तीव्र संभावना होती है। बीमारियों के उपचार की सभी व्यवस्थाएं स्वास्थ्य संस्थाओं में सुनिश्चित की गई हैं। संक्रामक रोगों की रोकथाम एवं नियंत्रण के लिए विभागीय मैदानी अमले का उन्मुखीकरण भी किया जा रहा है।

भोपाल में बंद ऋतु के दौरान मत्स्याखेट पर प्रतिबंध

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह द्वारा मछलियों की वंशवृद्धि और संरक्षण के उद्देश्य से 16 जून से 15 अगस्त तक की अवधि को बंद ऋतु (क्लोज सीजन) के रूप में घोषित किया है। इस दौरान समस्त नदियों और जलाशयों में किसी भी प्रकार का मत्स्याखेट पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा।

गरीब और जरूरतमंदों को मिले दुधारू पशु प्रदाय योजना का लाभ-राज्यपाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री दुधारू पशु प्रदाय योजना का लाभ ग़रीब और ज़रूरतमंदों को मिले। हितग्राहियों के चिन्हांकन में उनकी आर्थिक स्थिति का विशेष ध्यान रखा जाए। पशुपालकों को पशु प्रदान करते समय अच्छी नस्ल के स्वस्थ पशु प्रदान करे। उन्हें पशुओं के रख-रखाव आदि की जानकारी दे। श्री पटेल ने उक्त निर्देश राजभवन में आयोजित पशुपालन एवं डेयरी विकास विभाग की समीक्षा बैठक में दिए। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि दुधारु पशु प्रदाय योजना के अंतर्गत पशुपालकों के लिए दुग्ध संग्रहण की विशेष व्यवस्था बनाए। श्री पटेल ने दुधारू पशु प्रदाय योजना के तहत प्राप्त लक्ष्य तथा उपलब्धि, बजट एवं आगामी प्रस्तावों की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि योजना के लक्ष्य को आवश्यकतानुसार बढ़ाएं और उसे

प्राप्त करने का भरसक प्रयास करें। राज्यपाल श्री पटेल ने बैगा, भारिया, सहरिया जनजाति क्षेत्रों में पशुप्रदाय योजना की विगत और वर्तमान स्थिति की तुलनात्मक समीक्षा की।

उन्होंने इस दौरान वरिष्ठ अधिकारियों से पशु प्रदाय के लिए पात्रता निर्धारण, पशु चयन और वितरण की समस्त प्रक्रिया की विस्तार से जानकारी ली। राजभवन के जवाहर खण्ड में आयोजित बैठक में जनजातीय प्रकोष्ठ के अध्यक्ष श्री दीपक खाण्डेकर, राज्यपाल के प्रमुख सचिव श्री मुकेश चन्द गुप्ता, पशुपालन एवं डेयरी विकास विभाग के प्रमुख सचिव श्री गुलशन बामरा, राज्यपाल के अपर सचिव श्री उमाकांत भार्गव, राज्यपाल के विधि अधिकारी श्री उमेश श्रीवास्तव, संचालक पशु पालन एवं डेयरी विकास और संबंधित वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

मंत्री श्री काश्यप देवास में 6 अगस्त को उद्यमी समागम का शुभारंभ करेंगे

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री श्री चेतन्य कुमार काश्यप से मंत्रालय में लघु उद्योग भारती, मध्यप्रदेश के अध्यक्ष श्री राजेश मिश्रा और महामंत्री श्री अरुण सोनी ने मुलाकात की। उन्होंने मंत्री श्री काश्यप को 6 अगस्त, 2024 को देवास में आयोजित मध्यप्रदेश इण्डस्ट्रियल कॉन्क्लेव का शुभारंभ करने का आमंत्रण दिया, जिसे मंत्री ने स्वीकार किया। लघु उद्योग भारती के अध्यक्ष श्री राजेश मिश्रा ने बताया कि इस उद्यम समागम में देश के लगभग 3 हजार उद्यमी भाग ले रहे हैं। यह कॉन्क्लेव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाहक डॉ. कृष्ण गोपाल के मार्गदर्शन में होगा। एमएसएमई

मंत्री श्री काश्यप से लघु उद्योग भारती के अध्यक्ष श्री मिश्रा ने उद्योग अनुदान सहायता और डी.बी.टी. जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। उन्होंने मंत्री श्री काश्यप से अनुरोध किया कि मध्यप्रदेश एमएसएमई विकास प्रोत्साहन नीति-2021 में संशोधन कर धान के अलावा चना, मक्का, मसूर, सोयाबीन, गेहूँ एवं सरसों आदि से संबंधित खाद्य प्र-संस्करण उद्योगों को भी पूँजी अनुदान देने का अनुरोध किया। उन्होंने एमएसएमई पॉलिसी के अंतर्गत निवेश अनुदान प्रकरणों के निराकरण की समय-सीमा भी निर्धारित करने की माँग रखी। मंत्री श्री काश्यप ने लघु उद्योग भारती की माँगों पर समुचित नियमानुसार कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

जल गंगा संवर्धन अभियान: जीवन के लिए जल संरक्षण अपरिहार्य

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पृथ्वी पर जल सबसे महत्वपूर्ण संसाधनों में से एक है, इसीलिए जीवन के लिए जल संरक्षण अपरिहार्य है। यह अनमोल संसाधन संरक्षित रहे इसके लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। 16 जून तक चलाए जाने वाले इस अभियान के तहत जल स्रोतों के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार का कार्य प्रदेश भर में किया जा रहा है। अभियान के सफल परिणाम भी हम सभी को प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिल रहे हैं। 50 वर्ष पुरानी जल संरचना को पुनर्जीवित करते हुए इस अभियान ने जल संरक्षण की दिशा में नया कीर्तिमान स्थापित किए हैं। जबलपुर ज़िले के बघराजी ग्राम पंचायत में करीब 50 वर्ष पुरानी जल संरचना को पुनर्जीवित किया गया है। बारिश के मौसम में ग्रामीणों के लिए यह वरदान साबित होगा। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत कूपों के जीर्णोद्धार का कार्य किया जा रहा है। कूप की गाद निकालने व बंधाई कार्य करने से कूप का जल पेयजल के लिए उपयोग में लिया जाएगा। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की समस्या दूर होगी। जल स्रोतों के निकट प्रदूषण न हो इसके लिए अभियान के तहत सामुदायिक प्रयास किए जा रहे हैं। जन प्रतिनिधियों से लेकर नागरिक जन तक श्रमदान कर रहे हैं और जल को प्रदूषित होने से बचा रहे हैं। इससे न केवल पेयजल की गुणवत्ता में सुधार होगा बल्कि जल प्रदूषण के कारण होने वाली जल जनित बीमारियों से भी राहत मिलेगी। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत समस्त जिलों में पौधारोपण, नदी, नालों, ऐतिहासिक एवं पारम्परिक जल संरचनाओं, तालाब, झील, कुंओं, बावड़ियों आदि के संरक्षण एवं पुनर्जीवन का कार्य किया जा रहा है। इस अभियान में आमजन की सहभागिता भी सुनिश्चित की जा रही है। समाज के सभी वर्गों के लोग इस अभियान में सहयोग कर रहे हैं और श्रमदान कर जल स्त्रोतों की सफाई में योगदान दे रहे हैं। इसी क्रम में खरगोन ज़िले की ग्राम पंचायत अघावन में स्थित बावड़ी में श्रमदान कर साफ-सफाई की गई।

नगरीय प्रशासन राज्यमंत्री ने विकास परियोजना एवं कार्यों की समीक्षा की

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने सतना जिले की नागौद जनपद की दुर्गापुर तथा शिवराजपुर ग्राम पंचायत में खाली पड़ी सरकारी जमीन पर सोलर प्लांट लगाने की संभावनायें तलाशने के निर्देश अधिकारियों को दिये हैं। गुरुवार को राज्यमंत्री ने नागौद और सोहावल जनपद के सीईओ, सहायक यंत्रियों एवं जनपद स्तरीय अधिकारियों की बैठक लेकर दोनों विकासखण्डो में चल रहे विकास परियोजनाओं एवं शासकीय कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की समीक्षा की।राज्यमंत्री श्रीमती बागरी ने जल-गंगा संवर्धन अभियान में नागौद और सोहावल विकासखंड

में चल रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में ग्राम वन और नगर वन की अवधारणा को भी क्रियान्वित किया जाए। अभियान के दौरान वृहद वृक्षारोपण कार्य के लिए गड्ढों की तैयारी और पौधों की उपलब्धता अभी सुनिश्चित कर लें और बरसात प्रारंभ होते ही वृक्षारोपण कार्य की शुरुआत करें। ग्राम वन और नगर वन के वृक्षारोपण में सुरक्षित फेंसिंग, पत्थर की खखरी और सिंचाई के लिए ड्रिप इरिगेशन को बढ़ावा देवें। नदियों के किनारे पीपल, बरगद, नीम, कहुआ जैसे पौधे लगाए जाएं। राज्यमंत्री ने कहा कि खैरुआ सरकार धाम आस्था का केंद्र बिंदु है। यहां राजमार्ग से 60 फीट चौड़ी सड़क भी लोक निर्माण विभाग द्वारा स्वीकृत की गई है। खैरुआ सरकार धाम के पीछे के प्राचीन सरोवर का सौंदर्यीकरण कर पार्क का स्वरूप दिया जा सकता है। पार्किंग एवं अन्य जन सुविधा विकसित कर इसे धार्मिक पर्यटन का स्वरूप दिया जाए। राज्यमंत्री ने कहा कि आस्था के केंद्र धार्मिक स्थलों के अपग्रेडेशन का प्लान तैयार करें। उसरार में डेंस फॉरेस्ट्री को बढ़ावा दें। राज्यमंत्री ने ग्राम पंचायत में चल रहे कार्यों की समीक्षा में कहा कि वाटर हार्वेस्टिंग, हैंडपंपों के रिचार्ज के सौंदर्यीकरण, गौशालाओं के संचालन पर विशेष फोकस किया जाए।

इसके अलावा गांव की स्वच्छता बनाए रखने, गांवो के कचरे के उचित प्रबंधन की कार्य योजना भी बनाएं।

स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह ने जारी की मिशन अंकुर की वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा कि प्रदेश में निपुण भारत अभियान मिशन अंकुर के माध्यम से छात्रों की निपुणता में सकारात्मक प्रगति हुई है। रिपोर्ट में प्रदेश के सरकारी शालाओ में शिक्षा की गुणवता में किए जा रहे सुधारों का असर दिखा है। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि यह परिणाम स्कूल शिक्षा विभाग के हर स्तर के अधिकारियों और कर्मचारियों की मेहनत, लगन और परिश्रम का फल है। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने भोपाल में निपुण भारत अभियान मिशन अंकुर की कार्यशाला का शुभारंभ किया। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह ने राज्य एवं जिलावार वार्षिक मूल्यांकन 2024 का रिपोर्ट कार्ड जारी किया। उन्होंने कहा कि नवम्बर 2022 के मूल्यांकन के विगत रिपोर्ट कार्ड की तुलना में इस बार निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों की प्राप्ति में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। ?प्रमुख सचिव स्कूल शिक्षा श्रीमती रश्मि अरुण शमी ने बताया कि रिपोर्ट में मध्यप्रदेश में मूलभूत साक्षरता व संख्या ज्ञान के क्षेत्र में सुधार के लिये किये जा रहे प्रयासों, आने वाली समस्याओं और उनके समाधान के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी है। यह रिपोर्ट उन अन्य राज्यों के लिए मध्यप्रदेश के अनुभवों से सीख लेने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती है जो स्नरह (बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान) पर काम कर रहे हैं। शिक्षक के क्षेत्र में कार्य कर रहे विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों के लिए भी मार्गदर्शक का कार्य करेगी। उन्होंने कहा कि लागू किया जा रहा है। शिक्षा विभाग ने एफएलएन परिणामों को साकार करने के लिए कई परिवर्तनकारी उपाय किए हैं, जिनमें संशोधित शिक्षण पद्धतियां, छात्र अभ्यास के लिए विशेष कार्यपुस्तिकाओं की शुरूआत, व्यापक शिक्षक क्षमता-निर्माण कार्यक्रम और मजबूत मॉनिटरिंग और गवर्नेंस मैकेनिज्म की स्थापना शामिल है।

प्रदेश के दो सीएम राइज़ स्कूल वर्ल्ड बेस्ट स्कूल पुरस्कारों के टॉप 10 में

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के दो सीएम राइज़ स्कूलों को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ 10 स्कूलों में चुना गया है। अंर्तराष्ट्रीय संस्थाए टी-4 एज्युकेशन द्वार आज घोषित परिणामों के अनुसार सीएम राइज विनोबा स्कूल, रतलाम को इनोवेशन श्रेणी में तथा सीएम राइज मॉडल उच्चतर माध्यमिक स्कूल, झाबुआ को सपोर्टिंग हेल्दी लाइफ्स श्रेणी में चयनित किया गया है। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में प्रदेश के 2 सीएम राइज़ स्कूलों के चयन पर प्रदेश के स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने इन स्कूलों के शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों के साथ ही विभाग की समूची टीम को बधाई दी है। स्कूल शिक्षा मंत्री ने कहा कि, आज हमारा राज्य वैश्विक मंच

पर चमक रहा है, क्योंकि हमारे दो सीएम राइज स्कूलों ने विश्व के सर्वश्रेष्ठ स्कूल पुरस्कारों की शीर्ष 10 की सूची में स्थान बनाया है। यह हम सभी के लिए अत्यंत गर्व का विषय है। ये स्कूल हमारे सीएम राइज स्कूल योजना का हिस्सा हैं, जो मध्यप्रदेश सरकार का एक दूरदर्शी कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य हमारे सरकारी स्कूलों को उत्कृष्टता के केंद्रों में लाना है, जो नवाचारी अभ्यासों और मजबूत सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करते हैं। ये उपलब्धियाँ हमारे शिक्षकों, स्कूल लीडर्स, छात्रों और पूरे समुदाय के अद्भुत समर्पण और प्रयास को दर्शाती हैं। मैं स्कूल शिक्षा विभाग, समर्पित स्कूल लीडर्स, शिक्षक और इस अद्वितीय उपलब्धि में योगदान देने वाले सभी लोगों को हार्दिक बधाई देता हूँ। इन स्कूलों के दुनिया के सर्वश्रेष्ठक स्कूलों में शीर्ष स्थानों में शामिल होने पर स्कूल शिक्षा विभाग की प्रमुख सचिव श्रीमती रश्मि अरूण शमी ने विभाग के नेतृत्वकर्ता मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह के प्रति आभार व्यक्त करते हुए समूची टीम को बधाई दी। प्रमुख सचिव ने कहा कि, हमें गर्व है कि हमारे दो सीएम राइज स्कूलों को टी4 एजुकेशन द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित विश्व के सर्वश्रेष्ठ स्कूल पुरस्कारों की शीर्ष 10 सूची में शामिल किया गया है। प्रमुख सचिव श्रीमती शमी ने कहा कि, विभाग ने सीएम राइज स्कूल कार्यक्रम की शुरुआत एक दूरदृष्टि के साथ की है।

वीर सपूत शहीद कबीर उईके को राजकीय सम्मान के साथ दी गई अंतिम विदाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। छिंदवाड़ा जिले के वीर सपूत सीआरपीएफ के जवान स्व.श्री कबीर उइके जम्मू कश्मीर में आतंकी मुठभेड़ में शहीद हुए। उनका पार्थिव शरीर आज विशेष वाहन से उनके पैतृक ग्राम पुलपुलडोह, तहसील बिछुआ लाया गया। जहां उनके निज निवास में गार्ड ऑफ ऑनर देने के उपरांत राजकीय सम्मान से शहीद को अंतिम विदाई दी गई। राज्य शासन की ओर से लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उईके, शहीद स्व. श्री कबीर के निवास पहुंचीं और उनकी अंतिम विदाई में शामिल हुईं। मंत्री श्रीमती उईके ने शहीद को श्रध्दांजलि अर्पित कर उन्हें सादर नमन किया और ईश्वर से शहीद जवान की पुण्य आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना की। उन्होंने परिजनों

से भी आत्मीय मुलाकात कर उन्हें ढांढस बंधाया और ईश्वर से शहीद के परिजनों को यह असीम दुख सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की। उन्होंने जानकारी दी कि शुक्रवार को प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शहीद के परिजनों को संबल देने उनके पैतृक ग्राम पहुंचेंगे। शहीद स्व. श्री कबीर की शहादत को सम्मान देने के लिये एक गेट, एक चौराहा और जहां उन्होंने अध्ययन किया है उस स्कूल का नामकरण शहीद के नाम पर किया जाएगा। राज्य शासन की ओर से शहीद के परिजनों की हर संभव मदद की जायेगी।

उल्लेखनीय है कि छिंदवाड़ा ज़िले के ग्राम पुलपुलडोह थाना बिछुआ के श्री कबीर उईके जम्मू कश्मीर में सीआरपीएफ में तैनात थे। मंगलवार की रात कठुआ में आतंकी मुठभेड़ में गोली लगने से वे घायल हो गए। उन्हें इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया परंतु उन्हें बचाया नहीं जा सका। शहीद की अंतिम यात्रा में मंत्री श्रीमती उईके के साथ ही छिंदवाड़ा जिले के सांसद श्री विवेक साहू व पूर्व विधायक पं. रमेश दुबे सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, कलेक्टर श्री शीलेन्द्र सिंह, पुलिस अधीक्षक श्री मनीष खत्री, सी.आर.पी.एफ.के वरिष्ठ अधिकारी आई.जी.पी. श्री गुर शक्ति सिंह लोधी, डी.आई.जी. श्रीमती नीतू भट्टाचार्य व श्री पी.आर.जामभोलकर, कमांडेंट श्री जी.डी.पंडरीनाथ व डी.सी. श्री राम संजीवन सिंह, एसडीएम चौरई श्री प्रभात मिश्रा व एसडीओपी चौरई सहित पुलिस प्रशासन के अन्य अधिकारी, गणमान्य नागरिक, ग्रामवासी और शहीद के परिजन शामिल हुए। शहीद को भावभीनी श्रध्दांजलि अर्पित की गई। गार्ड ऑफ ऑनर के साथ शहीद को अंतिम विदाई दी।

नपा के डेढ़ दर्जन शॉपिंग कॉम्पलेक्सों में दुकानदारों ने गलियारों पर किया अतिक्रमण

अवैध अतिक्रमणकारियों की खैर नही : सीएमओ

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। नगर पालिका परिषद के लगभग डेढ़ दर्जन से ज्यादा शॉपिंग कॉम्पलेक्स जिला मुख्यालय में हैं। जिनमें 850 से ज्यादा दुकानें ऑवटिंत की गई हैं। जिनमें ज्यादातर दुकान संचालको के द्वारा शासन द्वारा जारी दिशा निर्देशों के विपरीत नियमों धता बताते हुए मनमानी ढंग से मूल स्वारूप में परिवर्तन, सार्वजनिक आवागमन मार्ग को वाधित करते हुए गलियारे पर अवैध कब्जा जमा लिया गया है। वहीं कुछ दुकानदारों ने गलियारे में अवैध निर्माण कराकर कब्जा जमा लिया है। जिससे आम जनो को आए दिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है साथ ही अवैध कब्जाधारियों के चलते शहर में आए दिन जाम की स्थिती निर्मित हो रही है।

आपको बताते चलें कि नगर पालिका परिषद जिला कार्यालय से कुछ किलोमीटर के अंदर नगर में लगभग 18 शॉपिंग कॉम्पलेक्स हैं। जिनमें नगर पालिका कॉम्प्लेक्स, विकाश भवन कॉम्प्लेक्स पूजा पार्क के समीप, छत्रसाल स्टेडियम के सामने एवं पीछे शॉपिंग कॉम्पलेक्स, गायत्री कॉम्पलेक्स अ ब्लॉक, गायत्री कॉम्पलेक्स ई ब्लॉक, गायत्री कॉम्पलेक्स डी ब्लॉक, मुखर्जी शॉपिंग कंपलेक्स, गॉधी चौक के समीप शाखा मैदान के चौतरफा, कुबेर कॉम्पलेक्स, कलेक्ट्रेट मार्ग पर गोल मार्केट, संजीवनी पालिका बाजार के इर्द-गिर्द, महात्मा गांधी शॉपिंग कॉम्पलेक्स पटेलपुल, सोनांचल बस स्टैंड के अंदर एवं पीछे, दक्षिण करौंदिया गोपाल दास मार्ग नाग मंदिर के समीप, एलआईसी ऑफिस के समीप, वसुंधरा कॉम्पलेक्स, कुशाभाऊ ठाकरे, ट्रांसपोर्ट नगर जमोड़ी थाना के समीप कॉम्पलेक्स सहित अन्य प्रमुख स्थलों पर दुकानदारों के द्वारा सार्वजनिक आवागमन हेतु चिहिंत गलियारे पर दुकानदारों के द्वारा अवैध अतिक्रमण कर निर्माण कार्य एवं दुकान का सामान जमाया गया है। जिसके चलते जिला मुख्यालय के आम उपभोक्ताओं को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है साथ ही शहर की यातायात व्यवस्था भी प्रभावित हो रही है।

कर वसूली में मिनी के कार्य उत्कृष्ट –

मिनी अग्रवाल सीएमओ नगर पालिका परिषद सीधी के द्वारा आमजनो के हितो की रक्षा की दिशा में लगातार सराहनीय कार्य किये जा रहे हैं। सीएमओ द्वारा एक ओर ऐसे कर दाता जिन पर लाखों में कर बकाया था और शासन के खाते में बकाया राशि जमा नही कर रहे थें। वहीं मिनी अग्रवाल के सार्थक प्रयास से बहुत की कम समय में शासन के खाते में धन वर्षा कराई गयी। नगर पालिका परिषद के दस्तावेजों की माने तो बताया जा रहा है कि मिनी अग्रवाल को कर वसूली में सर्वाधिक अंक हॉसिल हुए हैं, साथ ही उत्कृष्ट कार्य साबित हो रहे हैं।

कलेक्टर ने अतिक्रमण ध्वस्त करने के दियें निर्देश –

कलेक्टर के कुशल निर्देशन में जिले में अवैध अतिक्रमण के खिलाफ मुहीम प्रांरभ हो चुकी है। इसी दिशा में विगत दिवस कलेक्टर के द्वारा राजस्व अमले के साथ अहम बैठक आहुत कर साफ तौर पर संदेश दिया जा चुका है कि शासकीय कार्य के प्रति लापरवाही बिलकुल स्वीकार नही की जायेगी। वहीं दो लापरवाही अधिकारी कर्मचारियों पर कार्यवाई की गाज भी गिर चुकी है।

अतिक्रमण हटाने में सीएमओ के कार्य सराहनीय –

आपको बताते चले कि मिनी अग्रवाल नपा सीएमओ के द्वारा नगर पालिका क्षेत्र को अतिक्रमण से मुक्त कराने की दिशा में इन दिनो सराहनीय कार्य किये जा रहे हैं। विगत दिवस गॉधी चौके इर्द गिर्द दर्जनो अतिक्रमण कारियों के चंगुल से शासकीय भूमि को मुक्त कराया गया है। वहीं नपा के द्वारा समझाइस भी दी जा चुकी है कि यदि अब पुन: अतिक्रमण किया जाता है तो अतिक्रमण कारियों को न्यायालय की चौखट तक पहुँचाया जायेगा।

चुरहट पुलिस ने 59 नग नशीली कफ सिरफ की जप्त

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। डॉ.रविंद्र वर्मा पुलिस अधीक्षक के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविन्द श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में जिले में हो रहे अवैध मादक प्रदार्थो के परिवहन विक्रय के विरूद्ध अभियान चलाकर सीधी के नौजवानो को नशे की गिरफ्त से बाहर लाने के प्रयास में चुरहट थाना प्रभारी पुष्पेंद्र मिश्रा द्वारा सराहनीय कार्यवाही की गई है।

चुरहट थाना से मिली जानकारी के आधार पर 13 जून 24 को थाना प्रभारी चुरहट निरीक्षक पुष्पेंद्र मिश्रा को जरिये मुखबिर सूचना मिली की ग्राम सुंदरी का सुन्दरलाल गुप्ता अपने पक्के घर में अवैध कफ सिरफ विक्रय हेतु रखा है। थाना प्रभारी चुरहट द्वारा अविलम्ब वरिष्ठ अधिकारियो को सूचित किया जाकर वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में एक टीम गठित कर मुखविर के बताये स्थान पर भेजा गया। जहाँ एक व्यक्ति मिला, जिसका नाम पता पूछने पर अपना नाम सुंदरलाल गुप्ता पिता कन्हैयालाल गुप्ता उम्र 42 वर्ष निवासी ग्राम सुंदरी थाना चुरहट का बताया। जिसे मुखविर सूचना से अवगत कराया जाकर उसके घर की तलाशी ली गई तो पक्के घर के कोने में एक प्लास्टिक की बोरी में अवैध ग्लूको कफसिरफ की 59 नग कीमती लगभग 10,000 रूपये मिली। जिसके रखने व विक्रय के संबंध में कागजात की मांग की गयी किन्तु किसी तरह के कोई वैद्य दस्तावेज प्रस्तुत नही किया गया। जिस पर थाना चुरहट द्वारा आरोपी के विरुद्ध ड्रग कंट्रोल अधिनियम 1949 की धारा 5/13 एवं एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/21, 22 के तहत अपराध कायम कर विवेचना में लिया गया है।

छतरपुर के युवक ने पालोथर गांव में फांसी लगाई, मौत

जीजा के घर रहकर मजदूरी करता था

मीडिया ऑडीटर, दतिया निप्र। छतरपुर के जोहरा गांव निवासी 32 वर्षीय युवक ने दतिया के जिगना थाना इलाके के गांव पलोथर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृत युवक गांव पलोथर में अपने जीजा के यहां खेत पर रहकर मजदूरी करता था। घटना गुरुवार-शुक्रवार रात की है। सुबह जब परिजन खेत पहुंचे तो युवक को पेड़ पर लटका देख सहम गए। सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए जिला अस्पताल भेजा है।

पुलिस के मुताबिक, छतरपुर के गांव जोहरा निवासी 32 वर्षीय युवक जयकरन पिता विश्वनाथ परिहार दतिया के गांव पलोथर में अपने जीजा उत्तम परिहार के यहां पिछले 1 साल से रह रहा था। युवक यहां अपने जीजा की खेती काम देखता था। इसके अलावा मजदूरी भी करता था। सुबह जब परिजन खेत पर पहुंचे तो युवक पेड़ से रस्सी के फंदे पर लटका था। पुलिस को सूचना दी गई।

मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को फंदे से उतार और पीएम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया है। मृतक शराब पीने का आदि थी। इस के अलावा उसकी शादी नहीं हुई थी। फिलहाल पुलिस ने मामले में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। वहीं पुलिस आत्महत्या के कारणों का पता लगाने में जुटी हुई है।

मझौली तहसील परिसर में धारा 144 अंतर्गत प्रतिबंधात्मक आदेश जारी

धरना, प्रदर्शन जुलूस आदि रहेंगे प्रतिबंधित

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। उपखण्ड मजिस्ट्रेट मझौली रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी ने आदेश जारी कर उपखण्ड न्यायालय मझौली, तहसील न्यायालय परिसर मझौली एवं तहसील न्यायालय से लगा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मझौली परिसर को प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित कर निषेधाज्ञा प्रसारित की है कि कोई भी व्यक्ति प्रतिबंधित क्षेत्रों के अंतर्गत किसी भी प्रकार का धरना, प्रदर्शन, जुलूस, आंदोलन, घेराव, नारेबाजी, मशाल का प्रदर्शन नहीं करेगा तथा वाच संगीत (ढोल, साउण्ड बाक्स, डी.जे. आदि) का उपयोग नहीं करेगा। यदि कोई भी व्यक्ति, संस्था, संगठन आदेश का उल्लंघन करते हुये पाया गया तो उनके विरुद्ध दण्डात्मक कार्यवाही की जावेगी।

उन्होंने बताया कि तहसील मझौली अंतर्गत व्यक्ति/व्यक्तिगण/संस्था/राजनैतिक दल द्वारा आये दिन धरना प्रदर्शन किये जाने हेतु ज्ञापन प्रस्तुत किये जाते हैं जिससे न्यायालय में आने वाले आम नागरिकों एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मझौली में आने वाले गंभीर बीमारी वाले मरीजों को बाधा, क्षोभ या क्षति, साम्प्रदायिक, धार्मिक तथा जातिगत विद्वेश, लोक प्रशांति, विक्षुब्ध एवं शासकीय कार्य में व्यवधान उत्पन्न होने की प्रबल संभावना रहती है। नागरिकों के मौलिक अधिकारों का हनन न हो तथा न्यायालयीन कार्य, स्वास्थ्य एवं शांति व्यवस्था का सुचारू रूप में संचालन करने के लिये, साम्प्रदायिक सद्भाव, लोक व्यवस्था बनाये रखने व कानून व्यवस्था की स्थिति निर्मित होने की दृष्टि से दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 (2) के अंतर्गत प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया गया है।

उक्त आदेश के अवहेलना करते हुये पाये जाने पर धारा 188 भारतीय दण्ड विधान के तहत अभियोजन की कार्यवाही की जावेगी।

फिल्म अभिनेत्री गीता 24 जून को सीधी में

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। इंद्रवती नाट्य समिति, यूसीएन मास पब्लिक स्कूल और ट्रांसफ्रेम द्वारा सीधी सिनेमा क्लब के माध्यम से हर हफ्ते नि:शुल्क और ज्ञानवर्धक फिल्में दिखाई जाती हैं। जिसकी शुरुआत जून 2023 में हुई थी। सीधी सिनेमा क्लब के एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन यूसीएन मास पब्लिक स्कूल में किया रहा है। आयोजन मंडल ने बताया कि सिनेमा क्लब का एक वर्ष पूर्ण हो रहा है। इस अवसर पर हर रविवार अभिनेत्री गीता अग्रवाल शर्मा की फिल्मों का लगातार प्रदर्शन किया जा रहा है। अभिनेत्री मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शिरकत करने मुंबई से सीधी आ रहीं हैं। जो कि आगामी 24 और 25 जून को सीधी में रहेंगी। गीता ने अपने कैरियर की शुरुआत कैसा ये इश्क है, जैसे टीवी शो से कीं और 2007 की फिल्म फोटो से अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की। उन्होंने कॉमेडी फिल्म मुबारकां में अभिनय किया और फिर ओएमजी में मां का रोल मिला। जिसमे पंकज त्रिपाठी की पत्नी के कैरेक्टर में दिखाई दीं। इसके साथ ही दर्जनों फिल्मों बेहतरीन किरदार निभा चुकी हैं।

राजस्व निरीक्षक एवं पटवारी को कारण बताओ सूचना पत्र जारी

सीधी निप्र। उपखण्ड अधिकारी मझौली आर पी त्रिपाठी ने देवेन्द्र प्रताप सिंह राजस्व निरीक्षक मंडल गिजवार, रामलाल सिंह राजस्व निरीक्षक मंडल मड़वास एवं पुष्पराज सिंह पटवारी हल्का बकवा तहसील मझौली को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया है। उन्होने बताया कि 14 जून को सुबह 10.30 बजे से कार्यालय उपखण्ड अधिकारी मझौली द्वारा राजस्व निरीक्षक एवं हल्का पटवारियों की सी.एम. हेल्पलाईन में प्राप्त शिकायतों एवं अन्य विभागीय कार्यो की समीक्षा हेतु बैठक आहुत की गयी थी।

स्वास्थ्य विभाग के सिस्टम पर सवाल

90 साल की वृद्ध मां को 25 किमी रिक्शा धकाकर अस्पताल लाया 65 वर्षीय बुजुर्ग पुत्र, बीएमओ बोले- नहीं आए हमारे पास

मीडिया ऑडीटर, पन्ना निप्र। पन्ना जिले के देवेंद्र नगर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से स्वास्थ्य विभाग के दावों की पोल खोलती तस्वीरें सामने आई हैं। जहां भर्ती एक बीमार बुजुर्ग महिला को एंबुलेंस न मिलने के कारण उसका 65 वर्षीय बेटा 25 किलोमीटर दूर रिक्शा धकाकर जिला अस्पताल पहुंचा।

वहीं देवेंद्र नगर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के बीएमओ ने कहा है कि यह सभी आरोप झूठे हैं। महिला और उसका पुत्र अस्पताल आए ही नहीं हैं। चाहे तो आप सीसीटीवी फुटेज देख सकते हैं।

जानकारी के अनुसार पन्ना जिले के देवेंद्र नगर तहसील अंतर्गत जिगदहा निवासी रामभगत चौधरी (65) को अपनी 90 वर्षीय मां कमलाबाई चौधरी के पैर में चोट लगने पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र देवेंद्र नगर में भर्ती कराया था। जहां से वृद्धा को प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल पन्ना के लिए रेफर किया गया था। वृद्ध मां के बेटे रामभगत ने प्रबंधन से एंबुलेंस की मांग की, जो उसे नहीं मिली।

एंबुलेंस की सुविधा न मिलने से परेशान पुत्र ने अपनी मां को जुगाड़ के रिक्शे पर बैठाया और जिला अस्पताल पन्ना के लिए शुक्रवार की सुबह 8 बजे रवाना हुआ। चिलचिलाती धूप भीषण गर्मी में उसने 25 किलोमीटर का सफर तय किया। पुत्र को 25 किमी का सफर करने में करीब 12 घंटे का समय लगा गया।

इस बीच पन्ना से सतना जा रहे समाजसेवी संजय को रास्ते शाम को वृद्ध अपनी मां को रिक्शे पर लाते दिखा। जिन्होंने अपनी गाड़ी रोकी और वृद्ध मां और पुत्र की मदद कर अपने निजी वाहन से जिला अस्पताल पहुंचाया। जहां भर्ती कराने के बाद इलाज शुरू हुआ।

बीएमओ बोले- नहीं आए अस्पताल: इस मामले में देवेंद्र नगर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के बीएमओ अभिषेक जैन का कहना है कि कमला बाई नाम की कोई महिला यहां पर नहीं आए। आप चाहे तो सीसीटीवी फुटेज देख सकते हैं। उन दोनों का ही मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं हैं। साथ वे दोनों मां- बेटे नहीं बल्कि देवर-भाभी हैं।

करियर की टेशन में युवक ने किया सुसाइड

फंदे पर लटक कर दी जानय बी फार्मा की पढ़ाई के लिए ग्वालियर में लिया था एडमिशन

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर के सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र में एक युवक करियर की टेंशन में गुरुवार देर रात सुसाइड कर लिया। परिजनों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को फंदे से उतार कर अस्पताल पहुंचाया। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। अब पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

जानकारी के मुताबिक गायत्री मंदिर के पास रहने वाले हरिओम असाटी (28) ने अपने कमरे में ही फांसी पर लटक कर अपनी जान दी है। युवक बीएचएमएस की डिग्री करने के बाद, अब ग्वालियर में बी फार्मा की पढ़ाई करने वाला था। उसके लिए उसने वहां एडमिशन लिया था। कुछ ही दिनों बाद उसे ग्वालियर जाना था। मृतक के बड़े भाई दीपक असाटी ने बताया कि हरिओम अपने पढ़ाई को लेकर कुछ दिनों से परेशान था। शायद इसी परेशानी में उसने ये कदम उठाया है।

शांति समिति की बैठक 15 जून को

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। अपर कलेक्टर राजेश शाही ने जानकारी देकर बताया है कि 17 जून को ईदुज्जुहा का त्यौहार मनाया जाना है। उक्त त्यौहार को शांतिपूर्ण ढंग से मनाये जाने के संबंध में 15 जून को सायं 5 बजे कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बैठक आयोजित की गई है।

उन्होने सभी संबंधितों को सूचित किया है कि उक्त बैठक में नियत दिनांक समय व स्थान में उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

विश्व रक्तदान दिवस पर शिविर आयोजित, रक्तदाताओं ने जीवन रक्षा का दिया संदेश

आप भी करें रक्तदान कहलायें जीवन रक्षक : डॉ.एस.बी.खरे

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। जिला चिकित्सालय कैंपस के ब्लड बैंक में शुक्रवार को विश्व रक्तदान दिवस पर इसे एक उत्सव के रूप में मनाया गया। डॉ.एस.बी.खरे सिविल सर्जन द्वारा अथक प्रयास कर जिले के सभी विभाग प्रमुखों से संपर्क स्थापित कर आपतकाल स्थिती में मरीजों के जीवन रक्षा हेतु रक्त दान की अपील की गयी। जहॉ जिला जेल, स्वास्थ्य विभाग एवं वरिष्ट समाजसेवियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सेदारी निभाई व रक्तदान कर समाज में जीवन रक्षा का संदेश दिया।

ब्लड बैंक से डॉ. अमन सिंह चंदेल ने चर्चा के दौरान बताया कि 14 जून को विश्व रक्तदान दिवस के अवसर पर डॉ प्रेरणा पाठक ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर रामपुर नैकिन एवं रविशंकर सिंह जेल अधीक्षक ने सबसे पहले रक्तदान किया। इस अवसर पर डॉ.एसबी खरे सिविल सर्जन, डॉ. अमन सिंह चंदेल, ब्लड सेंटर ऑफिसर डॉ. हिमेश पाठक, डॉ. रवि पटेल, डॉ.अतुल पांडे सहित अन्य चिकित्सा अधिकारी कर्मचारी व गणमान्य जन मौजूद रहें।

रक्तदान करना आपकी सेहत के लिये हितकर – इंजी. आशीष मिश्रा: वरिष्ट समाजसेवी इंजी. आशीष मिश्रा जो समय समय पर खुद तो रक्त दान करते ही हैं साथ ही अपने मित्रों एवं समाज के अन्य लोगों को भी रक्त दान हेतु सदैव प्रेरित करते रहते हैं। विश्व रक्तदान दिवस के अवसर पर ब्लड बैंक पहुँच कर खुद तो रक्त दान किये ही साथ अपने मित्रो को भी पावन पुनीत कार्य के लिये प्रेरित कियें। रक्त दान उपरांत मीडिया से रूबरू होते हुए मिश्रा ने बताया कि रक्तदान सिर्फ एक अच्छा काम ही नहीं है, बल्कि आपकी सेहत के लिए भी काफी अच्छा माना जाता है।

रक्तदान करने से शरीर तमाम बीमारियों से बचा रहता है और दिमाग एक्टिव होता है। आपका ब्लड पतला रहता है, जिससे दिल की सेहत यानी हार्ट में भी सुधार होता है, वेट कंट्रोल में रहता है और कई तरह की बीमारियों से बचाव होता है।

आप भी करें रक्तदान, कहलायें जीवन रक्षक – डॉ. खरे: डॉ.एस.बी.खरे सिविल सर्जन जिला चिकित्सालय ने विश्व रक्तदान दिवस पर कहा कि आपके एक युनिट रक्त दान से किसी जरूरतमंद मरीज के जीवन की रक्षा हो सकती है साथ ही कुपोषण से शिकार दो से तीन नन्हे बालक बलिकाओं का जीवन बचाया जा सकता है। डॉ.खरे ने जिले वासियों से विनम्र अपील करते हुए कहा कि आप अपने सुविधा अनुसार 24 घंटे में कभी भी ब्लड बैंक पहुँच कर रक्त दान कर सकते हैं और जीवन रक्षक बन सकते हैं।

इसके साथ ही रक्तदान के पश्चात रक्तदाता को एक प्रमाण पत्र दिया जाता है जिसके माध्यम से आपतकाल स्थिती में ब्लड बैंक में उसी प्रमाण पत्र के आधार पर नि:शुल्क रूप से मरीज के जीवन रक्षा हेतु प्राथमिकता के साथ रक्त उपलब्ध कराया जाता है।

नाम परिवर्तन सूचना

मैं नीतू कश्यप पति श्री प्रदीप कुमार पटेल निवासी वार्ड क्रमांक 8 आस्था कुंज पंकू सिंह की बगिया के पास मझियार रोड बोदाबाग रीवा तह. हुजूर जिला रीवा म.प्र. की निवासी हूं। निम्नकथन शपथ पूर्वक करती हूं कि मेरे स्वयं के नाम से भारतीय जीवन बीमा निगम में पॉलिसी संख्या 376912222 है जिसमें गलती से मेरा नाम नीतू पटेल दर्ज हो गया है जो कि गलत है। मेरे दस्तावेजों जैसे आधार कार्ड व अन्य रिकार्ड में मेरा नाम नीतू कश्यप लिखा हुआ है, जो कि सही व सत्य है। अत: आज दिनांक से मेरे जीवन बीमा सहित अन्य सभी दस्तावेजों में मेरा नाम नीतू पटेल के स्थान पर नीतू कश्यप के नाम से जाना, पहचाना एवं लिखा व पढ़ा जाए।

नीतू कश्यप

विचार

... और 'कर्ज का मर्ज' बढ़ता ही चला गया

पुरातन काल से ही सामाजिक व्यवस्थाओं का अभिन्न अंग रहा लेन-देन अपने बदले हुए प्रारूप सहित आज भी विद्यमान है। आवास, शिक्षा, व्यावसायिक, कृषि आदि सर्च का एक बटन दबाते ही लोन लेने के ढेरों विकल्प हमारे सम्मुख उपस्थित हो जाएंगे। समस्त औपचारिकताएं पूर्ण होने के पश्चात ऋण प्राप्ति संभव होने से भी कहीं कठिन है अपनी विश्वसनीयता कायम रखते हुए अविलंब कर्ज चुकता कर पाना। उधारी का बोझ जी का जंजाल बन जाए तो इसे जानलेवा बनते भी देर नहीं लगती। विगत 23 मई को तमिलनाडु स्थित शिवाकाशी के निकट थिरुथांगल में घटित प्रकरण पर ही दृष्टि डालें, कथित रूप से कर्ज का बोझ एक परिवार के 5 सदस्यों द्वारा सामूहिक आत्महत्या करने का सबब बन बैठा। ऐसा ही समाचार 24 मई को फरीदाबाद के सैक्टर-37 से प्राप्त हुआ, जहां करोड़ों के कर्ज में डूबे एक व्यापारी ने सपरिवार आत्मघात का प्रयास किया। घटना में परिवार के 70 वर्षीय मुखिया की जान चली गई जबकि 5 सदस्यों की हालत गंभीर है। कथित तौर पर 40 करोड़ की कर्ज वसूली हेतु सूदखोर, रिकवरी एजैंट तथा बदमाशों का परिवार को धमकाना ही घटना को अंजाम देने का कारण बना। सूदखोरों के लिए अक्सर मुनाफे का धंधा साबित होने वाले कर्ज की फितरत ही कुछ ऐसी है कि कब ब्याज राशि जुड़कर भारी-भरकम देय रकम में तबदील हो जाए, पता ही नहीं चलता। दिग्गज कारोबारियों की लुटिया डुबोने से लेकर नामचीन हस्तियों तक को दीवालिया बनाने के अनेकों उदाहरण देश-विदेश में आए दिन देखने में आते ही रहते हैं। अच्छा-खासा ऋण लेकर उडऩ छू होने के किस्से भी जग जाहिर हैं तो ब्याज वसूली के नाम पर बोटी-बोटी नोच डालने वाले खलनायक भी समाज में बहुतेरे मिल जाएंगे। आर्थिक विपन्नता में अपशब्दों की भरमार सहित जब सामाजिक उत्पीडऩ भी शुमार होने लगे तो निस्संदेह, कर्जदार की मानसिक स्थिति उस स्तर तक पहुंचते देर नहीं लगती, जहां सर्वपक्षीय मुक्ति के रूप में केवल प्राणान्त ही विकल्प सूझे। एन.सी.आर.बी. की रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2022 के दौरान देश में हुई 1,70,924 आत्महत्याओं के कुल मामलों में 4.1 प्रतिशत आत्महत्याएं आर्थिक तंगी व कर्ज के चलते हुईं। कृषि क्षेत्र पर ही दृष्टिपात करें तो देश भर में 15.5 करोड़ किसानों पर 21 लाख करोड़ का कर्ज है। पिछले 2 दशकों के दौरान हजारों की संख्या में तनावग्रस्त किसानों ने आत्महत्याएं कीं। एक अध्ययन के मुताबिक, 2017 से 2021 के मध्य घटित 1000 किसान-आत्महत्याओं में 88% मामलों के पीछे भारी कृषि ऋण जिम्मेदार रहा। प्रति व्यक्ति औसत मासिक आय में दूसरे स्थान पर होने के बावजूद पंजाब के अधिकतर किसान भारी कर्ज के बोझ तले दबे हैं। कर्ज का यह मकडज़ाल पीढ़ी-दर-पीढ़ी पैठ बनाता जा रहा है। आजीविका चलाने अथवा मूलभूत सुविधाएं जुटाने हेतु कर्ज लेना जहां निर्धन की मजबूरी है, वहीं ऐश्वर्यशाली जीवन जीने की आकांक्षा पालने वाले सामान्य लोगों के लिए ऋण साधन सम्पन्न बनने का पर्याय भी बन चुका है। दूसरे शब्दों में, उधारी का घी पीने के लोभ ने हमारी 'सादा जीवन, उच्च विचार' वाली पारम्परिक जीवनशैली को काफी हद तक बदलकर रख दिया है। एस.बी.आई. की सर्वेक्षण रिपोर्ट के मुताबिक, वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान परिवारों पर कर्ज का बोझ दोगुना से भी अधिक होकर 15.6 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गया। रिपोर्ट के अनुसार, घरेलू बचत से निकासी का एक बड़ा हिस्सा भौतिक संपत्तियों में चला गया तथा 2022-23 में इन पर कर्ज भी 8.2 लाख करोड़ रुपए बढ़ गया। परिवारों की घरेलू बचत करीब 55% गिरकर सकल घरेलू उत्पाद के 5.1 प्रतिशत पर सिमट गई, जोकि पिछले पांच दशक में सबसे कम है। ऋणभार के संदर्भ में देश की स्थिति आंकें तो भारत के 33 फीसदी से अधिक राज्यों तथा विधायिका वाले केंद्र शासित प्रदेशों ने वर्ष 2023-24 के अंत तक, अपने कर्जों को उनके जी.एस.डी.पी. के 35 फीसदी को पार करने का अनुमान लगाया है।

जम्मू कश्मीर में सुरक्षा के लिए कई नई चुनौतियां उभरते देख मोदी ने जो फैसला किया है उसका बड़ा असर होने वाला है

नीरज कुमार दुबे

अधिकारियों के साथ एक बैठक कर केंद्र शासित प्रदेश के सुरक्षा हालात की समीक्षा की और आतंक रोधी क्षमताओं के पूर्ण इस्तेमाल का निर्देश दिया है। इसके बाद माना जा रहा है कि जम्मू-कश्मीर में चप्पे चप्पे पर सुरक्षा के बंदोबस्त पहले की तरह दिखाई दे सकते हैं। इस बीच, कश्मीर में 'लिक्विड आईईडी' एक बड़े खतरे के रूप में सामने आता दिख रहा है जिससे सुरक्षा बलों की चिंता बढ़ गयी है। सुरक्षा बल इसलिए भी चिंतित हैं क्योंकि आतंकवादियों को स्थानीय स्तर पर पनाह और अन्य प्रकार का समर्थन मिल जा रहा है। इसके अलावा एक अन्य दिक्कत यह है कि सुरक्षा बल यदि गांव वालों से पूछताछ कर रहे हैं या संदिग्धों को हिरासत में ले रहे हैं तो विपक्ष इसे लोगों को परेशान करने की कवायद बताकर इसका विरोध कर रहा है। जम्मू-कश्मीर में जल्द ही अमरनाथ यात्रा शुरू होनी है और अक्टूबर से पहले वहां राज्य विधानसभा के चुनाव भी कराये जाने हैं, ऐसे में सुरक्षा हालात को तत्काल दुरुस्त करना बेहद जरूरी हो गया है।

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाये जाने के बाद वहां शांति स्थापित हुई लेकिन उस शांति में खलल डालने के प्रयास जब तब होते रहते हैं इसलिए माना जा रहा है कि मोदी सरकार राज्य के हालात को संभालने के लिए जल्द ही कोई बड़ा कदम उठा सकती है। जहां तक प्रधानमंत्री की ओर से की गयी बैठक की बात है तो आपको बता दें कि तीर्थयात्रियों को लेकर जा रही एक बस पर हमले सहित जम्मू एवं कश्मीर में हाल के दिनों में हुई कई आतंकवादी घटनाओं के बाद गुरुवार को केंद्र शासित प्रदेश की सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की गयी और अधिकारियों को 'आतंकवाद रोधी क्षमताओं का पूर्ण इस्तेमाल' करने का निर्देश दिया गया। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और अन्य अधिकारी मोदी की अध्यक्षता में हुई बैठक में शामिल हुए। इस दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से भी बात की गई और सुरक्षा बलों की तैनाती और आतंकवाद विरोधी अभियानों पर चर्चा की गई। मोदी ने जम्मू एवं कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा से भी बात की और केंद्र शासित प्रदेश में स्थिति का जायजा लिया। उपराज्यपाल सिन्हा ने उन्हें स्थानीय प्रशासन द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। बैठक में प्रधानमंत्री को क्षेत्र में सुरक्षा संबंधी स्थिति और वहां चलाए जा रहे आतंकवाद विरोधी अभियानों से अवगत कराया गया। इस बीच, जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक आरआर स्वैन ने पाकिस्तान पर अपने भाड़े के सैनिकों के जरिये यहां का शांतिपूर्ण माहौल बिगाड़ने की कोशिश करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि भारतीय सेना दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए दृढ़ संकल्पित है। स्वैन ने दुश्मन एजेंटों को चेतावनी दी कि वे आतंकवाद का समर्थन करने के अपने फैसले पर पछताएंगे। उन्होंने यह भी कहा, ''उनके (ऐसे एजेंटों के) पास परिवार, जमीन और नौकरियां हैं, जबकि पाकिस्तानी आतंकवादियों के पास खोने के लिए कुछ नहीं है।'' डीजीपी ने रियासी जिले में संवाददाताओं से कहा, (जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद का) प्रारंभिक बिंदु सीमा पार है। विरोधी पक्ष का स्पष्ट इरादा यह है कि यदि वे कश्मीर में शांतिपूर्ण माहौल बिगाड़ने के लिए स्थानीय लोगों को विध्वंसक गतिविधियों के लिए प्रेरित नहीं कर सकते, तो पाकिस्तानियों को वहां भेजकर उनकी भर्ती करें और उन्हें जबरन इस दिशा में धकेलें।'' पुलिस प्रमुख ने कहा, ''दुश्मनों के एजेंट पैसे और नशीले पदार्थों के लिए ऐसा (विदेशी आतंकवादियों की मदद) कर रहे हैं। उनकी पहचान की जाएगी और उनसे सख्ती से निपटा जाएगा। हम उन्हें चेतावनी देना चाहते हैं कि (विदेशी) आतंकवादी मारे जाएंगे... लेकिन जो लोग उनका समर्थन कर रहे हैं, उन्हें पछताना पड़ेगा।'' उन्होंने कहा कि विदेशी आतंकवादियों के पास कोई नहीं है, चाहे उनके बच्चे हों या नहीं। उन्होंने कहा, ''हमें नहीं पता कि वे जेलों से उठाकर किसे यहां भेज रहे हैं, लेकिन जो लोग उनका (आतंकवादियों का) यहां समर्थन कर रहे हैं, उनके पास यहां जमीन, बच्चे और नौकरियां हैं और उन्हें नुकसान उठाना होगा।'' स्वैन ने कहा कि पाकिस्तान जम्मू कश्मीर के बीहड़ इलाकों का इस्तेमाल करना चाहता है ताकि वह विदेशी आतंकवादियों को जंगलों में भेजकर शांतिपूर्ण माहौल बिगाड़ सके। उन्होंने कहा, ''यही सच है।'' हालांकि, उन्होंने कहा कि सुरक्षा बल शांति बनाए रखने और जम्मू-कश्मीर से आतंकवाद को खत्म करने के लिए दृढ़ संकल्पित और वचनबद्ध हैं। उन्होंने कहा, ''हमारा जवाब क्या होगा? हम छोटे नुकसान के लिए तैयार हैं, क्योंकि जब हम पर युद्ध थोपा जाता है और आतंकवादी हमें मारने या मरने के लिए हमारे सामने खड़े होते हैं, तो हम अपने सभी संसाधनों का इस्तेमाल करते हैं और हमारा प्रयास मुंहतोड़ जवाब देना होता है। चूंकि उनके पास परवाह करने वाला कोई नहीं है, इसलिए नुकसान पहुंचाने की उनकी शक्ति अधिक प्रतीत होती है। उन्होंने कहा कि आतंकवाद ने 1995 में जम्मू क्षेत्र, खासकर डोडा और रामबन में अपने पैर पसारे, लेकिन 2005 तक यह पूरी तरह से खत्म हो गया। उन्होंने कहा, अगर हम इसी तरह की चुनौती का सामना करते हैं, तो निश्चिंत रहें कि हम उन्हें मुंहतोड़ जवाब देने और शांतिपूर्ण माहौल बनाए रखने के लिए उन्हें एक-एक करके मारने के लिए प्रतिबद्ध और वचनबद्ध हैं। दूसरी ओर, कश्मीर में उभर रहे नये खतरे की बात करें तो आपको बता दें कि जम्मू-कश्मीर के आंतकी परिदृश्य में तरल विस्फोटक 17 साल बाद फिर से वापसी करता दिख रहा है, क्योंकि हाल ही में पुलिस ने एक आतंकवादी ठिकाने पर छापेमारी में लिक्विड इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस' बरामद किया है। एक अधिकारी ने बताया कि इस 'लिक्विड इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस' का पता लगाना मुश्किल होता है और इसलिए इसे डिफिकल्ट टू डीकेटेक्ट (डी2डी) श्रेणी में रखा गया है। इस महीने की शुरुआत में पुलवामा में हुई मुठभेड़ में लश्कर-ए-तैयबा का आतंकी कमांडर रियाज डार उर्फ सथार और उसका साथी रईस डार मारा गया था। इसके बाद पुलिस ने आतंकवादियों के एक 'ओवर ग्राउंड वर्कर' (ओजीडब्ल्यू) को गिरफ्तार किया था। इसी ओजीडब्ल्यू से तरल आईईडी बरामद हुआ है। हम आपको बता दें कि रियाज डार 2014 में प्रतिबंधित संगठन लश्कर-ए-तैयबा में शामिल हो गया था और उसने मारे गए पाकिस्तानी आतंकवादियों अबू दुजाना और अबू इस्माइल के साथ काम किया था। वह कई आतंकवादी गतिविधियों में शामिल था। रियाज पर 10 लाख रुपये से अधिक का नकद इनाम घोषित था। वहीं, रईस डार पर पांच लाख रुपये का नकद इनाम घोषित था। पुलिस ने मुठभेड़ के तुरंत बाद लश्कर आतंकवादियों के लिए काम करने वाले ओजीडब्ल्यू के खिलाफ कार्रवाई की और उनमें से चार को गिरफ्तार कर लिया। अधिकारियों ने बताया कि पूछताछ के दौरान एक ओजीडब्ल्यू ने बताया कि आतंकवादियों को पुलवामा के निहामा के रहने वाले बिलाल अहमद लोन, सज्जाद गनी और शाकिर बशीर ने पनाह और रसद प्रदान की थी। उन्होंने बताया कि इससे आतंकियों के ओजीडब्ल्यू नेटवर्क का खुलासा हुआ और इन तीनों को बाद में गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बताया कि पूछताछ के दौरान ओजीडब्ल्यू ने पुलिस को बताया कि लश्कर-ए-तैयबा के दो आतंकवादियों ने तरल आईईडी तैयार किया है। शाकिर बशीर ने उन्हें बागों में छिपा दिया था। अधिकारियों ने बताया कि पुलिस और सेना की टीम ने इसे बरामद किया। सेना के विस्फोटक विशेषज्ञों ने प्लास्टिक कंटेनर में रखे छह किलोग्राम तरल आईईडी को नष्ट करने का निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि इसे एक बड़े खतरे के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि ऐसे विस्फोटकों को 'डी2डी' श्रेणी में रखा जा सकता है। हम आपको याद दिला दें कि दक्षिण कश्मीर में 2007 के दौरान आतंकवादी गुटों ने तरल विस्फोटकों का इस्तेमाल किया था, लेकिन इसके बाद जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के दशक के दौरान ऐसा कुछ नहीं देखा गया। अधिकारियों ने कहा कि खुफिया जानकारी मिली है कि पाकिस्तान स्थित आतंकवादी समूह अब तरल विस्फोटकों का इस्तेमाल करेंगे। उन्होंने बताया कि जम्मू-कश्मीर पुलिस ने फरवरी, 2022 में जम्मू में अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास पाकिस्तानी ड्रोन से फेंके हथियार और गोला-बारूद बरामद किये थे। बरामद किये गये विस्फोटकों में सफेद तरल की तीन बोतलें भी शामिल थीं। इन बोतलों को एक लीटर की बोतलों में पैक किया गया था। अधिकारियों ने बताया कि फोरेंसिक जांच से पता चला है कि यह ट्राइनाइट्रो टॉलुईन (टीएनटी) या नाइट्रोग्लिसरीन हो सकता है, जिसका इस्तेमाल आमतौर पर डायनामाइट में किया जाता है, लेकिन इस संबंध में अभी अंतिम रिपोर्ट नहीं आई है। अधिकारियों ने इस आशंका से इंकार नहीं किया कि इस तरह के विस्फोटक कश्मीर घाटी में पहुंचा दिये गये होंगे।

जहां तक जम्मू-कश्मीर के सुरक्षा हालात को लेकर हो रही राजनीति की बात है तो आपको बता दें कि नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला ने जम्मू क्षेत्र में आतंकवादी हमलों के बाद लोगों की कथित गिरफ्तारी और परेशान करने को लेकर जम्मू-कश्मीर प्रशासन पर बृहस्पतिवार को निशाना साधाते हुए कहा कि अगर सरकार आतंकवाद को खत्म करना चाहती है तो उसे स्थानीय लोगों को अपने साथ लेना होगा। अब्दुल्ला ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर कहा, %%यह अक्षम जम्मू-कश्मीर प्रशासन सिर्फ लोगों को गिरफ्तार करना, हिरासत में लेना और परेशान करना जानता है। वे बार-बार एक ही गलती करते हैं और फिर भी अलग नतीजे की उम्मीद करते हैं। आतंकवाद को खत्म करने के लिए आपको स्थानीय लोगों को अपने साथ मिलाने की ज़रूरत है, न कि अलग-थलग और नाराज़ करने की।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति कम होता मोदी का समर्पण भाव

संजय सक्सेना

लोकसभा चुनाव में बीजेपी की उत्तर प्रदेश में जो फजीहत हुई है, उसका ठीकरा एक-दूसरे के सिर फोड़ने की राजनीति के चलते राज्य में बीजेपी नेताओं के बीच आपसी वैमस्यता और गुटबाजी बढ़ती जा रही है। गुटबाजी का आलम यह है कि यह किसी एक स्तर पर नहीं ,नीचे से लेकर ऊपर तक तो दिखाई पड़ ही रही है, इसके अलावा इसकी तपिश से दिल्ली भी नहीं बच पाया है। बल्कि राजनीति के कई जानकार और पार्टी से जमीनी स्तर से जुड़े नेता और कार्यकर्ता भी इस बात से आहत हैं कि अबकी से टिकट वितरण में खूब मनमानी की गई, जिसका खामियाजा पार्टी को भुगतना पड़ रहा है। बात यहीं तक सीमित नहीं है सूत्र बताते हैं कि प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भी टिकट बंटवारे के तौर-तरीको से आहत दिखाई दे रहा है। बस फर्क यह है कि यह लोग सार्वजनिक रूप से ऐसा कुछ नहीं बोल रहे हैं जिससे विपक्ष को हमलावर होने का मौका मिल जाये। लोकसभा चुनाव में 80 की 80 सीटें जीतने का दावा करने वाली बीजेपी आधी सीटें भी नहीं जीत पाई। भाजपा की करारी हार के पीछे भले ही कई कारण गिनाए जा रहे हों, पर संघ से दूरी भी एक बड़ी वजह मानी जा रही है। संभवत: यह पहला चुनाव था, जिसमें भाजपा आलाकमान ने प्रत्याशियों के चयन से लेकर चुनावी रणनीति तैयार करने तक में कहीं भी संघ से विचार विमर्श करना उचित नहीं समझा। ऐसे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी बीजेपी लीडरशिप से मिलने के लिये अपनी तरफ से कोई पहल नहीं की। आमतौर पर चुनाव में जमीनी प्रबंधन में सहयोग करने वाले संघ के स्वयंसेवक इस चुनाव में कहीं नहीं दिखे। जिलों में न तो संघ और भाजपा की समन्वय समितियां दिखीं और न ही चैक-चैराहों से गांव की चैपाल तक में अमूमन होने वाली संघ परिवार की बैठकें कहीं नहीं हुईं। कम मतदान पर लोगों को घर से निकालने वाले स्वयं सेवक भी इस चुनाव में कहीं नहीं दिखे। खैर, जिस तरह से संघ और बीजेपी के बीच दूरियां बढ़ रही हैं, उसके केन्द्र में कहीं न कहीं बीजेपी आलाकमान और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नजर आ रहे हैं। मोदी के पीएम बनने के बाद पिछले दस वर्षो में यह दूरियां काफी तेजी से बढ़ी हैं। संघ से जुड़े कुछ बड़े स्वयं सेवकों के अनुसार इसकी मुख्य वजह पार्टी और सरकार द्वारा कोई भी निर्णय लेने के दौरान संघ परिवार के संगठनों के साथ संवादहीनता बनाये रखना। माना जाता है कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के बयान ने कि भाजपा अब पहले की तुलना में काफी मजबूत हो गई है। संघ और भाजपा के बीच की खाई को और चैड़ा करने का काम किया। संघ के कुछ पदाधिकारी कहते हैं कि संघ अचानक तटस्थ होकर नहीं बैठा। 2019 के लोकसभा चुनाव में मिले परिणामों के बाद आत्ममुग्ध भाजपा ने अपने सियासी फैसलों में संघ परिवार को नजरअंदाज करना शुरू कर दिया था। केन्द्र की मोदी सरकार और भाजपा की कुछ राज्य सरकारों ने संघ परिवार की अनदेखी कर एक के बाद एक कई ऐसे फैसले कर डाले, जिनसे संगठन की साख और सरोकारों पर विपरीत प्रभाव पड़ना लाजिमी था, इसलिए संघ ने भी अपनी भूमिका समेट ली। संघ और बीजेपी के बीच की खाई इस साल की शुरूआत से ही गहराने लगी थी। अयोध्या में श्रीरामलला के प्राण-प्रतिष्ठा को लेकर भी कुछ मतभेद उभरे थे, जो लोकसभा चुनाव में टिकट वितरण में बीजेपी की मनमानी के चलते और गहरा गया। परिणाम स्वरूप उत्तर प्रदेश

में भाजपा को तगड़ा झटका लगा, वहीं इंडी गठबंधन को बड़ी ताकत मिली। यूपी में जो एनडीए 2019 में 64 सीटें जीतने में सफल रहा था, वह 2024 में 36 सीटों पर सिमट गया। यानी पांच साल में सीधे 28 सीटों का नुकसान, जबकि बीजेपी सभी 80 सीटें जीतने का दावा रही थी। वहीं इंडी गठबंधन मतलब सपा-कांग्रेस जो 2019 के चुनावों में 6 सीट जीत सके थे, उन्होंने इस बार 43 सीटों पर परचम लहरा दिया। बात दें 2019 का चुनाव सपा-बसपा मिलकर लड़े थे, वहीं कांग्रेस अकेले मैदान में कूदी थी, जिसमें सपा की पांच और कांग्रेस की एक सीट पर जीत हुई थी, इस तरह आज का इंडी गठबंधन 2019 में छह:सीट जीत पाया था। दस सीटों पर बसपा का कब्जा हुआ था। भाजपा के इस बेहद खराब प्रदर्शन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नाराजगी को बड़ा कारण माना जा रहा था। इसी क्रम में हाल ही में दिये गये आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के बयान को भी जोड़कर देखा जा रहा है। अतीत के पन्नों को पलटा जाये तो बात जुलाई 2021 की है। करीब 6 महीने बाद यूपी में विधानसभा चुनाव 2022 होना था। राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ जमीनी स्तर बीजेपी को मजबूती प्रदान करने के लिये पूरी तरह से मैदान में डटा हुआ था। संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले यूपी विधान सभा चुनाव 2022 के चलते नागपुर छोड़कर लखनऊ में प्रवास करने लगे थे। उन्हें लखनऊ में रहकर प्रदेश के राजनीतिक माहौल को मजूबत करने के मिशन पर लगाया गया था। वहीं भैया जी जोशी राम मंदिर निर्माण प्रॉजेक्ट के संरक्षक थे। इस दौरान बीजेपी के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष और प्रभारी राधा मोहन सिंह ने लखनऊ प्रवास में संघ के अहम नेताओं के साथ बैठक की थी। जिसमें 2022 के चुनाव को लेकर संघ ने फीडबैक दिए थे। इसमें सत्ता विरोधी लहर की चुनौती से निपटना, कार्यकर्ताओं से नाराजगी को दूर करना, प्रत्याशियों को लेकर जनता में रोष आदि कंट्रोल करने का संदेश था।सब कुछ ठीकठाक चल रहा था। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव चरण दर चरण आगे बढ़ा तो आरएसएस का ये सहयोग जमीन पर दिखाई देने लगा। भाजपा को एंटी इनकमबैंसी का जो नुकसान हो रहा था, उसे संघ ने हर विधानसभा में 400 से 500 छोटी बड़ी बैठकें कर पाटने का काम किया। वोटरों को जागरूक करना उन्हें बूथ तक भेजने का काम किया गया। संघ की प्रांत टोली, विभाग कार्यवाह, प्रचारक जिलों के समन्वयक, विधानसभा के समन्वयकों से सीधा संवाद किया गया। इस पूरे आयोजन में भाजपा के प्रभारी, राष्ट्रीय संगठन मंत्री गवाह रहे। इस पूरी कवायद का नतीजा यह निकला कि भारतीय जनता पार्टी ने पूर्ण बहुमत के साथ दोबारा यूपी में सरकार बनाने का इतिहास रच दिया। योगी ने दोबारा सत्ता संभाली और संघ वापस अपने काम की तरफ लौट गया। परंतु दो साल बाद लोकसभा चुनाव 2024 में परिस्थतियां एकदम बदल गईं। जनवरी में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा से भाजपा आत्मविश्वास के लबरेज दिखाई दी। मोदी का चेहरा और राम मंदिर का श्रेय के साथ पन्ना प्रमुख तक फैल चुका पार्टी का संगठन देख पार्टी के नेता ये मानकर चल चुके थे कहीं कोई दिक्कत नहीं है। बता दें हर लोकसभा चुनाव से पहले आरएसएस के कार्यकर्ता हर लोकसभा क्षेत्र दर्जनों बैठकें कर लेते हैं। जनता क्या सोच रही है, प्रत्याशियों के बारे में उनका क्या ख्याल है, सांसद कितना प्रभावी है,

गमछे से गला घोंटकर लिव-इन पार्टनर को मार डाला

शव नाले में फेंककर जलाने की कोशिश, पहली पत्नी के बच्चे को लेकर मर्डर

मीडिया ऑडीटर, कोरबा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में लिव-इन पार्टनर ने गमछा से गला घोंटकर युवती को मार डाला। इसके बाद लाश को नाले में फेंककर जलाने की कोशिश की, लेकिन लाश नहीं जली तो फरार हो गया। तीन दिन पहले युवती की लाश कुसमुंडा थाना क्षेत्र के सौंदरहा नाले में मिली थी।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक युवती का नाम राम कुमारी कश्यप (37) है। तेरस राम कश्यप और दशरथ कश्यप ने मृतका की पहचान अपनी बहन के रूप में की। शॉर्ट पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में गला दबाकर हत्या करने की बात सामने आई थी, जिसके बाद पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच तेज की।

पुलिस ने आरोपी को घेराबंदी कर पकड़ा: पुलिस ने बताया कि जांच में पता चला कि युवती का अफेयर जांजगीर-चांपा जिले के नवागढ़ सेमरा निवासी मनबोध भारद्वाज के साथ था। इसके बाद पुलिस ने आरोपी को घेराबंदी कर पकड़ा। थाने लाकर पूछताछ की।

आरोपी ने पहले पुलिस को गुमराह किया, लेकिन कड़ाई से पूछताछ पर सब उगल दिया।

चोरी-छिपे लिव-इन रिलेशन में रह रहा था: पूछताछ में आरोपी ने बताया कि उसकी पत्नी की काफी समय पहले मौत हो गई थी। इसलिए वह राम कुमारी कश्यप के साथ चोरी-छिपे लिव-इन रिलेशनशिप में रह रहा था। इसी बीच 11 जून को आरोपी की पहली पत्नी के बच्चे को लेकर दोनों के बीच कहासुनी हुई। विवाद इतना बढ़ा कि आरोपी ने युवती की हत्या करने की साजिश रच डाली।

गमछा से गला घोंटकर उतारा मौत के घाट: लिव-इन पार्टनर मनबोध युवती को बहला-फुसलाकर घुमाने के बहाने से बाहर ले गया। नाले के पास दोनों बैठे हुए थे। जहां फिर दोनों के बीच विवाद हुआ। ऐसे में मनबोध ने गमछा से गला घोंटकर उसे मौत के घाट उतार दिया।

लाश पर पेट्रोल छिड़ककर आग लगाई: आरोपी ने बताया कि वारदात के बाद लाश को नाले में फेंका, जहां गाड़ी से पेट्रोल निकालकर लाश पर छिड़का और आग लगा दी। सबूत मिटाने की कोशिश की, लेकिन आरोपी सफल नहीं हो सका। पुलिस ने गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया, जहां से कोर्ट ने आरोपी को जेल भेज दिया है।

35 साल की महिला से गैंगरेप

देर रात घर में घुसकर 6 बदमाशों ने किया दुष्कर्म, पति काम से बाहर गया था

मीडिया ऑडीटर, कोरबा एजेंसी। कोरबा जिले में 35 साल की महिला से बुधवार रात गैंगरेप किया गया। शहर के खरमोरा की रहने वाली महिला अपने घर में अकेली थी तभी 6 युवक उसके घर पहुंच गए। ये सभी युवक आसपास की ही बस्ती के थे और शराब के नशे में थे धुत थे।

पूरा मामला सिविल लाइन थाना इलाके का है। जानकारी के मुताबिक, महिला का एक बच्चा भी है जो पिता के साथ कहीं बाहर गया हुआ था। महिला के अकेले होने के बाद फायदा उठाकर युवकों ने उसके साथ गैंगरेप किया। इसके बाद सभी भाग निकले।

आरोपी पहले भी जेल जा चुके हैं: आरोपियों के भागने के बाद महिला किसी तरह पुलिस थाने पहुंची। उसने आपबीती और आरोपियों की हैवानियत पुलिस को बताई जिसके बाद पुलिस ने टीम बनाकर आरोपियों की तलाश शुरू की। सभी युवक आसपास की ही बस्ती के थे, पुलिस ने उनके ठिकानों पर दबिश दी और वहीं से सभी को गिरफ्तार कर लिया। पकड़े गए आरोपियों का नाम राजेश कुमार गोड, गुलशन गिदोडे, गुलशन नटराज ,अजय खेरवार, गुड्डू साहू और संदीप यादव है। पूछताछ और उनके रिकॉर्ड से पता चला कि पकड़े गए आरोपी पहले भी कई केस में जेल जा चुके हैं। साथ ही जेल से छूटने के बाद आपराधिक गतिविधियों में लिप्त रहे हैं।

चाकूबाजी, लूटपाट और अपहरण की वारदात

शैलेश पांडेय बोले- भाजपा सरकार ने न्यायधानी को अपराधधानी बना दिया, पुलिस का सूचना तंत्र फे

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में आए दिन हो रही चाकूबाजी, लूटपाट और अपहरण की वारदातों को लेकर कांग्रेस सत्तारूढ़ सरकार और जनप्रतिनिधियों के खिलाफहमलावर हो गई है। पूर्व विधायक शैलेश पांडेय ने तंज कसते हुए सवाल किया कि अपराधमुक्त का दावा करने वाले अब मौन क्यों हैं? उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार ने न्यायधानी को अपराधधानी बना दिया है। पूर्व विधायक ने गुरुवार को एक बयान जारी कर आरोप लगाया कि प्रदेश में डबल इंजन की सरकार रहते आपराधिक घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि बिलासपुर जिले में प्रदेश शासन के उपमुख्यमंत्री अरुण साव और केंद्रीय राज्यमंत्री तोखन साहू भी यहीं रहते हैं।

मामूली कहासुनी पर लोग चाकू मार रहे: इसके बावजूद बिलासपुर शहर में आपराधिक घटनाएं कम नहीं हो रही हैं । आलम यह है कि बिलासपुर में मामूली कहासुनी पर लोग एक दूसरे पर चाकू से हमला कर रहे हैं और लूटपाट की घटनाएं हो रही हैं।

बेटियां भी अब शहर में झगड़ा करते दिखाई दे रहीं: पांडेय ने आरोप लगाया कि लूटपाट और अपहरण की घटनाओं के वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हो रहे हैं। लोग घर में घुसकर हमला कर रहे हैं। पुलिस अपराध रोकने में पूरी तरह नाकाम है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा शासन काल में आधी रात को बार खुले रहते हैं, बेटियां भी अब शहर के बाहर युवकों के साथ झगड़ा करते दिखाई दे रही हैं और इनके वीडियो वायरल हो रहे हैं।

बिना टिकट यात्रियों पर 2 लाख 91 हजार का जुर्माना

रेल मंडल ने चलाया टिकट चेकिंग अभियान, 5 अनाधिकृत वेंडर भी पकड़े गए

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर रेल मंडल के अंतर्गत चलाए गए टिकट चेकिंग अभियान में 378 मामलों से 2,91,345 रुपए जुर्माना वसूल किया गया। इसमें बिना टिकट के 294 मामलों में 2,58,390 रुपए, अनियमित टिकट के 68 मामलों से 31,355 रुपए और बिना बुक लगेज के 16 मामलों में 1600 रुपए जुर्माना शामिल है।

ये कार्रवाई वरि.मंडल वाणिज्य प्रबंधक अनुराग कुमार सिंह के मार्गदर्शन और मंडल वाणिज्य प्रबंधक एस.भारतीयन के नेतृत्व में बिलासपुर-चांपा-भाटापारा सेक्शन में 12 जून को की गई।

जागरूकता के उद्देश्य से चलाया गया अभियान: गहन टिकट चेकिंग अभियान टिकट लेकर यात्रा करने वाले यात्रियों की सुविधा, बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों की रोकथाम और स्टेशनों में यात्रियों को रेलवे नियमों का पालन करने के प्रति जागरूकता के उद्देश्य से चलाया गया।

कई ट्रेनों में चलाया गया टिकट चेकिंग अभियान: इस अभियान में वाणिज्य निरीक्षक, मुख्य टिकट निरीक्षक और टीटीई स्टाफ भी शामिल थे। इस दौरान बिलासपुर-चांपा-भाटापारा स्टेशनों के बीच कई ट्रेनों में बिलासपुर और उसलापुर स्टेशन में टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया।

पेंट्रीकार की जांच भी की गई: टिकट चेकिंग अभियान के साथ ही 12834 हावड़ा-अहमदाबाद एक्सप्रेस के पेंट्रीकार की भी जांच की गई। पेंट्रीकार में कार्यरत कर्मचारियों का मेडिकल सर्टिफिक्रेट, परिचय-पत्र, सफाई व्यवस्था और अग्निशमन यंत्रों की उपलब्धता और वैधता की जांच की गई।

बिलासपुर स्टेशन में 5 अनाधिकृत वेंडर पकड़े गए: इस दौरान एक वेंडर के पास मेडिकल सर्टिफिक्रेट और परिचय-पत्र नहीं पाए जाने पर जुर्माने की कार्रवाई की गई। टिकट चेकिंग के दौरान बिलासपुर स्टेशन में 5 अनाधिकृत वेंडर पकड़े गए। उनसे 4090 रुपए बतौर जुर्माना वसूला गए।

जिला स्तर पर किया जायेगा दशम् अन्तराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन 21 को

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी 21 जून 2024 को दशम् अन्तराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन कराये जाने हेतु दिशा.निर्देश राज्य शासन से प्राप्त हुए हैंए जिसके तहत समस्त ग्राम स्तरए जनपद स्तर तथा जिला स्तर पर वृहत रूप से अन्तराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया जाना है। जिला स्तर पर अन्तराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम विद्यालय मनेन्द्रगढ़ के क्रीडा परिसर में 21 जून 2024 दिन शुक्रवार को प्रात: 6:30 बजे से आयोजित किया जाएगा। इसके लिए जिला शिक्षा अधिकारी अजय कुमार मिश्रा तथा विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी सुरेन्द्र प्रसाद जायसवाल को नोडल अधिकारी बनाया गया है। 21 जून 2024 को योग दिवस का आयोजन जिला स्तरीय सभी विभागों को आपसी समन्वय करते हुए विभागीय प्रशिक्षित योग शिक्षकों से योगाभ्यास कराते हुएए तथा कम से कम 500 व्यक्तियों को योगाभ्यास में सम्मिलित किया कराया जाये। इसे सर्व प्राथमिकता दें।

हर घर आंगन योग दिवस मनाने विभिन्न विभागों को निर्देश जारी

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी 21 जून 2024 को दशम् अन्तराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन अंतर्गत हर घर आंगन योग के संदेश को प्रोत्साहित करने के लिए कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने दिशा निर्देश जारी किये है, इनमें अनुविभागीय अधिकारी (रा.) खगवां, चिरमिरी, भरतपुर, तहसीलदार खगवां, चिरमिरी, भरतपुर, कोटाडोल, नागपुर, आयुक्त नगर निगम चिरमिरी, मुख्य नगर पंचायत अधिकारी खोंगापानी, झगराखांड, नई लेदरी, मुख्यक कार्यपालन अधिकारी खगवां, चिरमिरी, भरतपुर को प्रत्येक ग्राम पंचायत, नगरीय निकायों के प्रमुख स्थलों पर 21 जून 2024 को प्रात: 6:00 बजे से योग दिवस का कार्यक्रम आयोजित कर कार्यक्रम के फोटो एवं वीडियो अथवा विशेष वाहक के हस्ते जिला कार्यालय समाज कल्याण में उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे।

खनिज माफिया बेलगाम, बेखौफ चल रहा अवैध उत्खनन

हाईकोर्ट के आदेश के बाद भी नहीं लग रहा लगाम, 7 हाइवा समेत 13 गाड़ियां जब्त

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट की सख्ती के बाद भी बिलासपुर जिला प्रशासन के अफसर अवैध उत्खनन करने वालों पर लगाम नहीं लगा पा रहे हैं। यही वजह है कि अरपा नदी सहित आसपास के इलाकों में धड़ल्ले से अवैध रेत उत्खनन चल रहा है। इधर, खनिज विभाग के अफसर अवैध उत्खनन पर प्रतिबंध लगाने का दावा कर रहे हैं। पिछले दो दिनों में 15 रेत घाटों में छापेमारी कर 7 हाइवा समेत 13 वाहनों की जब्ती बनाई गई है, जिसमें वाहन मालिकों पर खनिज अधिनियम के तहत केस दर्ज किया गया है।

बेधड़क होकर रेत माफिया अवैध उत्खनन कर रहे: दरअसल, अरपा नदी में अवैध उत्खनन रोकने पर हाईकोर्ट ने प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया है, जिसके बाद भी तोरवा के दोमुहानी से लेकर दयालबंद, सरकंडा, कोनी, तुर्काडीह, सेंदरी सहित घुटकू व आसपास के इलाकों में अवैध उत्खनन कर रेत चोरी किया जा रहा है। इसके साथ ही सीपत, मस्तूरी और कोटा क्षेत्र के गांवों में भी बेधड़क होकर रेत माफिया अवैध उत्खनन कर रहे हैं।

खनिज विभाग का दावा-अवैध उत्खनन पर सख्ती से हो रही कार्रवाई: खनिज विभाग के अफसरों का दावा है कि अवैध उत्खनन और परिवहन पर लगातार कार्रवाई की जा रही है। विभाग की टीम ने बीती रात ग्राम लोधीपारा, कोनी, सेंदरी, कछार, लोफंदी, मंगला, धुरीपारा, लोखंडी, निरतू, घुटकू, लमेर, नेवरा, कोटा बोड़सरा, सिरगिट्टी क्षेत्र मे रेत खदान एवं खनिज परिवहन कर रहे वाहनों की सघन जांच की गई। इस दौरान सेंदरी क्षेत्र में चार हाइवा व लोधीपारा क्षेत्र में दो ट्रैक्टर को खनिज रेत का अवैध परिवहन करते पाये जाने पर पुलिस थाना कोनी की अभिरक्षा में रखा गया है।

मुरुम का अवैध उत्खनन: नेवरा क्षेत्र में तीन हाइवा, एक जेसीबी, एक चेन माउंटेड मशीन को खनिज मिट्टी, मुरुम का अवैध उत्खनन और कोटा क्षेत्र में दो ट्रैक्टर को खनिज रेत का अवैध परिवहन करते पाए जाने पर चौन माउंटेड मशीन को सुपुर्दगी में देते हुए अन्य सभी वाहनों को पुलिस थाना कोटा की अभिरक्षा में रखा गया है। रायल्टी पर्ची के बिना खनिजों का उत्खनन और परिवहन करने वाले सभी 13 वाहन चालकों व मालिकों पर छत्तीसगढ़ गौण खनिज नियम 2015 के नियम 71 खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) अधिनियम की धारा 21 के तहत खनिज के अवैध परिवहन का प्रकरण दर्ज किया गया है।

पुलिस भी नहीं करती कार्रवाई: हाईकोर्ट ने अवैध उत्खनन पर रोक लगाने जिला प्रशासन को सख्ती बरतने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही दोषियों के खिलाफ केवल जुर्माना वसूली करने के बजाय एफआईआर कराने के लिए भी कहा है। लेकिन, खनिज विभाग की टीम के साथ ही पुलिस भी जब रेत परिवहन करते हुए वाहनों को जब्त करती है, तो एफआईआर दर्ज करने के बजाय केस को खनिज विभाग को सौंप दिया जाता है।

गुजरने वाली 50 ट्रेनें कैंसिल, 19 जून से 10 जुलाई तक नहीं चलेंगी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ से गुजरने वाली 50 ट्रेनों को फिर कैंसिल कर दिया गया है। ये गाड़ियां 19 जून से 10 जुलाई तक अलग-अलग दिनों में नहीं चलेंगी। इसके चलते कोलकाता, बिहार, दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश जाने वाले यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। रेलवे प्रशासन की ओर से बताया गया है कि, पश्चिम मध्य रेलवे के भोपाल मंडल और दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के बिलासपुर मंडल में डेवलपमेंट के कार्य के चलते गाड़ियों का परिचालन कैंसिल किया है।

भोपाल रेल मंडल में होगा दूसरी लाइन का काम: भोपाल रेल मंडल के मालखेड़ी-महादेवखेड़ी रेलवे स्टेशनों को दूसरी रेल लाइन से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। यह काम 16 जून से 10 जुलाई तक चलेगा। रेल प्रशासन का दावा है कि इस कार्य के पूर्ण होते ही गाड़ियों की समयबद्धता और गति में तेजी आएगी।

नवीन कम्पोजिट मदिरा दुकान मनेंद्रगढ़ अब लालपुर रोड़ चौनपुर में संचालित

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। घरौंदा सेंटर चौनपुर के समीप अवस्थित देशी मदिरा दुकान मनेंद्रगढ़ हेतु नवीन स्थल, भवन चयन हेतु निविदा की अद्यतन कार्यवाही निर्धारित समयावधि 08 अप्रैल 2024 को निविदा प्रपत्रों के परीक्षणोपरां अजीत सिंह नैना के स्वामित्व की भूमि, ग्राम चौनपुर प.ह.न. 09 तहसील मनेंद्रगढ़ जिला एमसीबी (छ.ग.) भूमि खसरा नं. 159/20 रकबा 0.023 पर निर्मित भवन का चयन देशी मदिरा दुकान मनेंद्रगढ़ के संचालन हेतु किया गया है।

वर्तमान में देशी कम्पोजिट मदिरा दुकान मनेंद्रगढ़ का संचालन उक्त नवीन चयनित स्थल में 11 जून 2024 से किया जा रहा है।

निगम ने डॉक्टर पर लगाया 10,000 जुर्माना

नाली में मलबा डालने पर कार्रवाई, जल-भराव रोकने जुटा प्रशासन, दो शिफ्ट में सफाई गैंग की ड्यूटी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बारिश के मद्देनजर बिलासपुर नगर निगम प्रशासन जल भराव रोकने के लिए नाले, नालियों की निकासी दुरुस्त करने, अधूरे नाला निर्माण को पूर्ण कराने जुट गया है। निकासी रोकने के मामले में गुरुवार को निगम प्रशासन एक्शन में नजर आया। विनोबा नगर में निर्माणाधीन मकान का पूरा मलबा नाली में डंप कर, जाम करने वाले डॉक्टर के खिलाफ10 हजार का जुर्माना लगाया है। जोन क्रमांक 4 के अंतर्गत विनोबा नगर में डाक्टर आरपी मिश्रा द्वारा भवन निर्माण कराया जा रहा है। कार्य के दौरान बिल्डिंग मटेरियल नाली में डंप करने की शिकायत सामने आई। मामले की जानकारी मिलने पर नगर निगम ने कड़ी कार्रवाई करते हुए डाक्टर के खिल ाफ10 हजार का जुर्माना किया।

निर्माणाधीन भवन का मलबा नाली में डाला गया: मगरपारा रोड पर ही डॉक्टर ललित माखीजा के निर्माणाधीन भवन का भी मलबा नाली में डाला जा रहा था, जिस पर कार्रवाई करते हुए 5 हजार का जुर्माना किया गया। सड़क और नाली पर मलबा डंप करने वालों के खिलाफ लगातार कार्रवाई के निर्देश निगम कमिश्नर अमित कुमार ने दिए हैं, जिसके तहत अब लगातार की जा रही है।

जाम होने पर जोन कमिश्नर जिम्मेदार होंगे: नगर निगम कमिश्नर अमित कुमार ने गुरुवार को निगम सभाकक्ष में सभी जोन कमिश्नर, अधिकारियों की बैठक लेकर जल भराव रोकने, सफाई और अधूरे निर्माण कार्य को युद्धस्तर पर पूर्ण कराने कहा। उन्होंने छोटे बड़े सभी नालियों की सफाई करने के साथ ही जाम होने पर सफाई विभाग के साथ जोन कमिश्नर को जिम्मेदार दी है। उन्होंने निर्माणाधीन कश्यप कालोनी नाला का कार्य 20 जून तक पूरा करने का अल्टीमेटम दिया।

अवैध होर्डिंग के विरुद्ध महाभियान: निगम कमिश्नर कुमार ने शहर में चल रहे अवैध होर्डिंग के खिलाफ कार्रवाई और तेज करने तथा सड़क किनारे, चौराहों पर लगे अवैध फ्लेक्स,बैनर को हटाने महाअभियान चलाने कहा। उन्होंने दुकानदारों द्वारा दुकान के ऊपर और बाहर अवैध और असुरक्षित तरीके से लगाए गए बोर्ड और बैनर को भी हटाने के निर्देश दिए।

सफाई गैंग की ड्यूटी दो शिफ्ट में: उन्होंने सफाई विभाग और जोन को निर्देशित किया की नाली सफाई के लिए सफाई गैंग की ड्यूटी दो शिफ्ट में सुबह और शाम को लगाएं, ताकि बारिश होने पर तत्काल सफाई अभियान में जुटा जा सके।

स्टील कंपनी का एजेंट बताकर 43 लाख की ठगी

रायपुर के कारोबारी से ट्रांसफर करा लिए पैसे, फिर वॉट्सऐप पर भेजा फर्जी बिल

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर में एक ठग ने खुद को स्टील कंपनी का एजेंट बताकर कारोबारी से 43 लाख रुपए की ठगी कर ली है। ठग इतना शातिर था कि उसने रकम वसूलने के लिए फर्जी बिल भी बनवाए, फिर पैसों को फर्जी अकाउंट नंबर पर ट्रांसफर करवा लिए। कारोबारी ने मोवा थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। रायपुर के स्टील कारोबारी किशोर राजदेव ने एफआईआर में पुलिस को बताया कि उसकी राजदेव स्टील प्राइवेट लिमिटेड के नाम से कंपनी है। 25 मई को संजय सिंह नाम के एक व्यक्ति का उनके पास फोन आया।

फर्म में रखे लोहे का कच्चा माल बेचने की डील: उसने खुद को दुर्गापुर के पारसनाथ रोलिंग मिल्स लिमिटेड का एजेंट बताया। संजय सिंह ने उसे फर्म में रखे लोहे का कच्चा माल (बिलेट) बेचने की बात कही। दोनों के बीच 130 मीट्रिक टन का सौदा हुआ। किशोर ने ट्रांसपोर्ट के लिए फैक्ट्री में गाड़ियां भेज दी।

फर्जी बैंक खाते में पैसे वसूले: दूसरी ओर ठग ने किशोर के पत्नी के वॉट्सऐप पर फर्जी बिल भेज दिए, फिर उन्हें अपने लिए बैंक खाते में पैसे भेजने के लिए कहा। किशोर में संजय सिंह के दिए बैंक अकाउंट में 43 लाख 23 हजार रुपए डलवा दिए। इस बीच बिल में दी गई रकम में कारोबारी को शक हुआ तो उन्होंने कंपनी के अकाउंटेंट को संपर्क किया। पता चला कि ठग ने किसी फर्जी सुषमा कुमारी के अकाउंट में पैसे ट्रांसफर करवाए लिए हैं, जिसके बाद पूरा मामला मोवा पुलिस थाने पहुंचा।

कुवैत से 45 भारतीयों के शव कोच्चि लाए गए

मंगाफ (एजेंसी)। कुवैत के मंगाफ में बुधवार (12 जून) को लगी भीषण आग में मारे गए 45 भारतीयों के शव लेकर भारतीय वायुसेना का स्पेशल एयरक्राफ्ट भारत पहुंच गया है। यह केरल के कोच्चि एयरपोर्ट पर लैंड हुआ, क्योंकि मृतकों में सबसे ज्यादा 23 लोग केरल के हैं। इसके बाद एयरक्राफ्ट दिल्ली जाएगा। जान गंवाने वाले अन्य 22 लोगों में तमिलनाडु के 7, आंध्र-उत्तर प्रदेश के 3-3 और बिहार, ओडिशा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, झारखंड, हरियाणा, पंजाब और पश्चिम बंगाल के 1-1 लोग हैं।

एक मृतक किस राज्य का है, इसकी जानकारी अब तक नहीं मिली है। वहीं इस मामले कुवैत ने अब तक 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। हादसे के बाद भारत के विदेश राज्य मंत्री कीर्तिवर्धन सिंह कुवैत गए थे। उन्होंने 5 अस्पतालों का दौरा किया, जहां घायल भारतीयों का इलाज किया जा रहा है। कीर्तिवर्धन सिंह आज उसी एयरक्राफ्ट से वापस लौटे हैं, जिनसे शवों को लाया गया है। कुवैत के मंगाफ शहर की एक बिल्डिंग में 12 जून को लगी आग में कुल 49 लोगों की मौत हुई थी, जबकि 50 से ज्यादा लोग घायल हैं। इनमें से 48 शवों की डीएनए टेस्ट के जरिए पहचान की गई, जिसमें 45 भारतीय निकले, जबकि 3 फिलिपींस के हैं। हालांकि, पहले मृतकों में नेपाल, पाकिस्तान और मिस्र के नागरिक होने की बात भी कही जा रही थी।

केजरीवाल पत्नी के सामने मेडिकल कराना चाहते हैं

नई दिल्ली(एजेंसी)। शराब नीति केस में तिहाड़ जेल में बंद अरविंद केजरीवाल ने मेडिकल टेस्ट को लेकर दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट में याचिका लगाई है। दिल्ली सीएम की मांग है कि मेडिकल टेस्ट के दौरान पत्नी सुनीता वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए जुड़ी रहें। इस मामले में शनिवार (15 जून) को सुनवाई होगी। 5 जून को राउज एवेन्यू कोर्ट ने जेल अधिकारियों को निर्देश दिया था कि केजरीवाल के जरूरी मेडिकल टेस्ट कराए जाएं। साथ ही केजरीवाल की मेडिकल ग्राउंड पर 7 दिन की जमानत की मांग वाली अंतरिम जमानत याचिका को खारिज कर दिया था और ज्यूडिशियल कस्टडी 19 जून तक बढ़ा दी थी। केजरीवाल को 21 मार्च को अरेस्ट किया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने 10 मई को उन्हें अंतरिम जमानत दी थी। जमानत पर 21 दिन बाहर रहने के बाद 2 जून की शाम 5 बजे केजरीवाल ने तिहाड़ में सरेंडर किया था।

भारतीय सेना को मिला पहला आत्मघाती ड्रोन

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन आर्मी को भारत में बने आत्मघाती ड्रोन नागस्त्र-1 की पहली खेप मिल गई है। इन ड्रोन्स को नागपुर की कंपनी सोलर इंडस्ट्रीज की इकोनॉमिक्स एक्सप्लोसिव लिमिटेड यूनिट ने बनाया है। सेना ने 480 लॉइटरिंग म्यूनिशन (आत्मघाती ड्रोन) का ऑर्डर दिया था। इनमें से 120 की डिलीवरी कर दी गई है। ड्रोन को नागस्त्र-1 नाम दिया गया है, जिसकी रेंज 30 किमी तक है। इसका एडवांस वर्जन दो किलो से ज्यादा गोला-बारूद ले जाने में सक्षम है। इसका इस्तेमाल दुश्मनों के ट्रेनिंग कैंप, ठिकानों और लॉन्च पैड पर हमला करने के लिए किया जाएगा, ताकि सैनिकों का जोखिम कम से कम हो। लॉइटरिंग म्यूनिशन (जिसे आत्मघाती ड्रोन या कामिकेज ड्रोन भी कहा जाता है) एक एरियल वैपन सिस्टम है। ये ड्रोन हवा में टारगेट के आसपास घूमते हैं और आत्मघाती हमला करते हैं।

हर गरीब को मिलेगा पक्का मकान-तीन करोड़ मकान बनाये जायेंगे-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारतीय संस्कृति ने मानव जीवन में जल तत्व को सर्वोपरि माना है। संपूर्ण सृष्टि हो या मानव देह सभी में जल ही जीवन का आधार है। जिस प्रकार पृथ्वी की हरितिमा को नदियाँ जीवन प्रदान करती हैं, उसी प्रकार मानव देह के संचालन में जल की महत्वपूर्ण भूमिका है। मनुष्य के विचारों पर भी जल का बहुत अधिक प्रभाव रहता है। जीवन में जल की महत्ता को स्वीकारते हुए ही प्रदेश में विश्व पर्यावरण दिवस से गंगा दशहरा तक जल-गंगा संवर्धन अभियान संचालित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को मुलताई में उत्कृष्ट विद्यालय मैदान पर विशाल जनसभा को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बैतूल जिले के 347 करोड़ रुपए की लागत के 1008 कार्यों का भूमि पूजन और लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने विभिन्न शासकीय योजनाओं के हितलाभ भी वितरित

किए। केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री डीडी उईके ने भी संबोधित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत को विश्व का नंबर वन देश बनाने के लिए प्रदेशवासी कृत-संकल्पित हैं। प्रदेश के विकास के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा की जा रही पहल के लिए सभी प्रदेशवासी उनके आभारी हैं। लोकसभा चुनाव में प्रदेशवासियों ने प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रति अपने विश्वास को अभिव्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार ने निर्णय लिया है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी की मंशानुसार कोई भी गरीब बिना पक्के मकान के नहीं रहेगा। सभी पात्र परिवारों को पक्का मकान उपलब्ध कराने के लिए 3 करोड़ पक्के मकान बनाए जायेंगे। हर घर जल और हर नल में जल अभियान भी प्रदेश में जारी है। सभी पंचायतों में नल से जल और हर घर में गैस का चूल्हा उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार कृत संकल्पित है।

नीट पेपर लीक- सुप्रीम कोर्ट का एनटीए को नोटिस

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शक्रवार को नीट यूजी पेपर लीक और इसकी सीबीआई जांच की मांग वाली याचिका पर सुनवाई की। कोर्ट ने कहा कि एनटीए 2 हफ्तों के अंदर इस पर अपना पक्ष रखे। इस मामले पर 8 जुलाई को अगली सुनवाई होगी। पिटीशनर हितेश सिंह कश्यप ने आरोप लगाया कि गुजरात के गोधरा में जय जल राम परीक्षा सेंटर को चुनने के लिए कर्नाटक, ओडिशा, झारखंड आदि राज्यों में 26 छात्रों ने 10-10 लाख रुपए घूस दी थी। कश्यप ने कहा कि इस सेंटर पर ड्यूटी दे रहे टीचर सहित 5 लोगों को गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तार टीचर के पास से सभी 26 छात्रों की डीटेल मिली है। इसलिए इस मामले की

सीबीआई जांच जरूरी है। स्टूडेंट्स ने मध्य प्रदेश, राजस्थान और यूपी समेत 7 राज्यों की हाईकोर्ट में नीट में गड़बड़ियों को लेकर याचिकाएं दायर की हैं। एनटीए ने कहा है कि अलग-अलग कोर्ट के अलग-अलग फैसला सुनाने से छात्रों में भ्रम फैल सकता है। इसलिए सभी मामले सुप्रीम कोर्ट में ट्रांसफर किए जाएं। जबलपुर हाईकोर्ट में भोपाल की निषिता सोनी और जबलपुर की अमिशी वर्मा ने मार्क्स मिसमैच होने को लेकर पीआईएल दायर की। निषिता सोनी का कहना है कि एनटीए की आंसर की के मुताबिक उन्हें 617 मार्क्स मिलने चाहिए, लेकिन स्कोर कार्ड में उन्हें 340 नंबर मिले हैं।

झारखंड में ट्रक और ऑटो की टक्कर में 5 लोगों की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। झारखंड के गढ़वा जिले में एक दर्दनाक सड़क हादसा पेश आया है। यहां एक ऑटोरिक्शा और ट्रक की टक्कर में कम से कम पांच लोगों की मौत हो गई है जबकि छह अन्य लोग गंभीर रुप से घायल हो गए हैं। हादसा बृहस्पतिवार देर रात करीब डेढ़ बजे बंशीधर नगर थाना क्षेत्र के पाल्हे गांव के नजदीक हुआ। थाना प्रभारी आदित्य नायक ने बताया कि सिलियाटोंगर गांव के 12 लोग ऑटोरिक्शा में सवार होकर नगर उंटारी रेलवे स्टेशन जा रहे थे और उन्हें गुजरात जाने वाली ट्रेन पर सवार होना था। रास्ते में उनके ऑटो और विपरीत दिशा से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक के बीच टक्कर हो गई। उन्होंने बताया कि घायलों को सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। मृतकों की पहचान बिमलेश कुमार कनौजिया (42), अरुण भुइयां (30), बिकेश भुइयां (20), राजा कुमार (21) और राजकुमार भुइयां (53) के रूप में हुई है।

कैबिनेट मंत्री बनने के बाद पहली बार अपने गृह जिला पहुंचे जीतनराम मांझी

गया (एजेंसी)। कैबिनेट मंत्री बनने के बाद जीतन राम मांझी पहली बार अपने गृह जिला गया पहुंचे। इस दौरान कार्यकर्ताओं और शुभचिंतकों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। इस मौके पर उन्होंने पत्रकारों से बातचीत की। जीतनराम मांझी ने कहा कि ये मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ काम करने का मौका मिला।

मांझी ने कहा कि प्रधानमंत्री का विजन और चैलेंज है कि अधिक से अधिक लोगों को लाभ पहुंचाया जाए। उन्होंने कहा कि गया के लोगों की अपेक्षा हैं कि युवाओं की बेरोजगारी दूर किया जाए, भगवान हमें शक्ति दें कि ज्यादा से ज्यादा नियोजन कर लोगों को रोजगार से जोड़े। वहीं, बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री और राजद नेता तेजस्वी यादव के बयान पर केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने कहा कि जो सरकार 2005 से पहले रही है, उन्हें कानून व्यवस्था पर कुछ भी कहने का कोई अधिकार नहीं है। 2005 से पहले का जो जंगल राज था उसे याद करके सब लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

उस समय कार्रवाई की जगह मुख्यमंत्री आवास में समझौता किया जाता था लेकिन आज वैसा नहीं है। आज घटनाएं घटती है, लेकिन त्वरित कार्रवाई करके हुए न्याय किया जाता है।

आपके 7 सांसद कहां हैं? दिल्ली जल संकट के बीच संजय सिंह ने बीजेपी से पूछा सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने शुक्रवार को राजधानी के जल संकट पर दिल्ली के सात भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के लोकसभा सांसदों की चुप्पी पर सवाल उठाया। एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा कि दिल्ली की जनता ने भाजपा के सभी सातों सांसद चुने, फिर भी हरियाणा की पार्टी की सरकार दिल्ली की जनता को सजा दे रही है। आपके सात सांसद कहाँ हैं? सिंह ने कहा, पीने का पानी उपलब्ध कराने से बड़ा कोई दान नहीं है। मैं उन सातों सांसदों से कहना चाहूंगा कि वे हरियाणा और केंद्र से अपील करें और (दिल्ली) एलजी से मिलें और पानी के मुद्दे पर कोई भेदभाव न करें। संजय सिंह ने कहा कि दिल्ली के लोगों ने बीजेपी के सातों सांसद जिताए हैं, उसके बाद भी हरियाणा की बीजेपी सरकार दिल्ली के लोगों को सजा दे रही है। हरियाणा की बीजेपी सरकार दिल्ली के हक का पानी रोककर हमसे दुश्मनी निकाल रही है। मैं कहना चाहता हूँ कि आप हमसे दुश्मनी निकालिए लेकिन दिल्ली के लोगों को परेशान मत कीजिए। पिछले एक पखवाड़े से

अभूतपूर्व गर्मी के बीच दिल्ली के कई हिस्से पानी की आपूर्ति की भारी कमी का सामना कर रहे हैं। यह संकट यमुना नदी में जल स्तर कम होने और प्रमुख जल उपचार संयंत्रों में तकनीकी समस्याओं के कारण उत्पन्न हुआ। इस व्यवधान के कारण कई क्षेत्रों में पानी की आपूर्ति बहुत कम हो गई है, जिससे लोगों को टैंकरों और बोरवेलों पर निर्भर रहना पड़ रहा है।

सीजेआई बोले- सुप्रीम कोर्ट के जजों के पास सातों दिन काम

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया डीवाई चंद्रचूड़ ने जजों की छुट्टी और पेंडिंग केस की गति को लेकर कहा- सुप्रीम कोर्ट के जज सातों दिन काम करते हैं। सोमवार से शुक्रवार तक 40-50 मामले निपटाते हैं, शनिवार को छोटे केसेस पर सुनवाई होती है। इसी दिन सुरक्षित रखे गए फैसलों को लिखवाया जाता है। रविवार को सोमवार के केस पढ़े जाते हैं। दरअसल, पीएम के इकोनॉमिक एडवाइजरी काउंसिल के मेंबर संजीव सान्याल ने हाल ही में कहा था कि सुप्रीम कोर्ट जज बहुत अधिक छुट्टियां ले रहे हैं। इसपर सुप्रीम कोर्ट के कई जजों ने असहमति जताई थी। सीजेआई चंद्रचूड़ ने कैंब्रिज

यूनिवर्सिटी में स्पीच के दौरान इसी बात का जवाब दिया। सीजेआई ने कहा- सुप्रीम कोर्ट के जज छुट्टी के दौरान संवैधानिक मुद्दों पर विचार करते हैं। हमारे लिए यह करना बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि संवैधानिक मामले देश की सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक स्थिति के साथ-साथ लोगों के अधिकारों को भी प्रभावित करते हैं। सीजेआई ने स्पीच के दौरान कहा- क्या सुप्रीम कोर्ट की भूमिका सिर्फ मामलों का निपटारा करना है। या राजनीति, समाज को बदलना भी है? मैं छुट्टी पर हूं। ब्रिटेन की यात्रा कर रहा हूं, लेकिन इस समय मेरे पास संविधान पीठ के 6 बड़े फैसले हैं। इनमें से एक अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के अल्पसंख्यक स्टेटस वाला ममला है। इसके अलावा और केसेस हैं। ये ऐसे मामले हैं, जो हमारे जीवन के महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पहलुओं को परिभाषित कर रहे हैं।

सिक्किम में लैंडस्लाइड से 6 की मौत, कई लापता

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के उत्तरी राज्यों में हीटवेव और तेज गर्मी का दौर लगातार जारी है। दूसरी ओर नॉर्थ-ईस्ट में भारी बारिश देखने को मिल रही है। पिछले तीन दिन से जारी बारिश के चलते सिक्किम में अब तक 6 लोगों की मौत हो चुकी है। जगह-जगह लैंडस्लाइड और बाढ़ में सैकड़ों घर और कई सड़कें बह गईं। सबसे ज्यादा तबाही सिक्किम के मंगन जिले में हुई है। यहां गुरुवार (13 जून) को एक दिन में 220 मिमी से ज्यादा बारिश हुई। इससे पिछले साल बना संगकालांग ब्रिज ढह गया, जिससे गुरुडोंगमार झील और युनथांग घाटी जैसे पर्यटन स्थलों के लिए मशहूर मंगन जिले के जोंगु, चुंगथांग, लाचेन और लाचुंग जैसे शहर देश के बाकी हिस्सों से कट गए हैं। राहत-बचाव में जुटे डिजास्टर मैनेजमेंट के अधिकारियों ने बताया कि लाचुंग और चुंगथांग में करीब 2 हजार पर्यटक फंसे हैं। इन्हें अब हेलिकॉप्टर से ही रेस्क्यू किया जा सकता है, लेकिन खराब मौसम में हेलिकॉप्टर का उड़ पाना मुमकिन नहीं है। फिलहाल, पर्यटक जहां फंसे हैं, उन्हें वहीं रहने को कहा गया है। सिक्किम में तीस्ता नदी भी उफान पर है, जिससे सिंगताम शहर के निचले इलाकों में रहने वाले लोग प्रभावित हो सकते हैं। पिछले साल उत्तरी सिक्किम में एक हिमनद झील के फटने से अचानक बाढ़ आई थी। इसमें 100 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। शुक्रवार (14 जून) को भी सिक्किम में बारिश की आशंका जताई है। मौसम विभाग ने बताया कि सिक्किम, पश्चिम बंगाल, अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय में बारिश हो सकती है।

29 जून को दिल्ली में जेडीयू की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक

नई दिल्ली (एजेंसी)। जनता दल (यूनाइटेड) ने 29 जून को दिल्ली में राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक निर्धारित की है। उल्लेखनीय उपस्थित लोगों में कैबिनेट मंत्री और जद (यू) नेता राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह और राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर शामिल हैं। बैठक की अध्यक्षता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार करेंगे। गौरतलब है कि यह बैठक लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद बुलाई गई है। इसके अलावा बैठक के दौरान चुनाव परिणामों के विश्लेषण और 2025 में होने वाले विधानसभा चुनावों की रणनीतियों सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा की जाएगी। जदयू द्वारा कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये जाने की भी उम्मीद है, जिनमें से एक बिहार के लिए विशेष पैकेज की मांग भी शामिल

है। माना जा रहा है कि बैठक में पार्टी कई बड़े अहम फैसला कर सकती है। दरअसल, इस बार नरेंद्र मोदी की सरकार में नीतीश कुमार और उनकी पार्टी जदयू की भूमिका काफी अहम है। क्योंकि भाजपा बहुमत से दूर हो गई है। जदयू की ओर से ललन सिंह और रामनाथ ठाकुर मंत्री बने हैं। लेकिन मलाईदार मंत्रालय नहीं मिला है। इसको लेकर भी जदयू के भीतर से नाराजगी की खबरें आ रही हैं। ऐसे में इस बैठक पर सभी की नजर रह सकती हैं। साथ ही साथ बिहार में कई सीटों पर उपचुनाव होने हैं। उन उपचुनाव को लेकर भी इस बैठक में मंथन होगी। साथ ही साथ 2025 की तैयारी भी शुरू करने पर मंत्रणा की जाएगी। वहीं, जनता दल (यूनाइटेड) के प्रवक्ता केसी त्यागी ने कहा कि वे 26 जून को होने वाले चुनाव से पहले एनडीए सरकार में अध्यक्ष पद के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा नामित व्यक्ति का समर्थन करेंगे। लोकसभा स्पीकर को लेकर जेडीयू प्रवक्ता केसी त्यागी ने कहा कि टीडीपी और जेडीयू एनडीए के साथ हैं। हम बीजेपी द्वारा (स्पीकर के लिए) नामित किए गए व्यक्ति का समर्थन करेंगे।

आंध्र प्रदेश में हुआ मंत्रालयों का बंटवारा

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने शुक्रवार (14 जून) को नए मंत्री के विभागों का आवंटन किया। आंध्र प्रदेश के मंत्रियों के विभागों की सूची के अनुसार, नायडू ने कानून और व्यवस्था अपने पास रखी है, डिप्टी सीएम पवन कल्याण को पंचायती राज, पर्यावरण, वन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय आवंटित किया गया है, जबकि सीएम नायडू के बेटे नारा लोकेश को एचआरडी, आईटी इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार की जिम्मेदारी दी गई है। तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) प्रमुख नायडू ने बुधवार को आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली, जो कार्यालय में उनका चौथा कार्यकाल है। प्रधानमंत्री

नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा, नितिन गडकरी, चिराग पासवान, रामदास अठावले, अनुप्रिया पटेल, बंदी संजय कुमार, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) नेता प्रफुल्ल पटेल, पूर्व उपाध्यक्ष शपथ ग्रहण समारोह में राष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू और कई अन्य नेता शामिल हुए।नायडू के साथ, जन सेना पार्टी (जेएसपी) प्रमुख पवन कल्याण और टीडीपी प्रमुख के बेटे नारा लोकेश ने भी विजयवाड़ा के बाहरी इलाके केसरापल्ली में गन्नावरम हवाई अड्डे के पास शपथ ली। 175 सीटों वाली आंध्र प्रदेश विधानसभा में 164 सीटें जीतकर टीडीपी जेएसपी और बीजेपी के साथ गठबंधन में सत्ता में आई। नायडू के नेतृत्व वाली टीडीपी ने अपने दम पर 135 सीटें जीतीं, जबकि जेएसपी ने 21 और बीजेपी ने 8 सीटें जीतीं। टीडीपी को 45.60 फीसदी वोट शेयर के साथ 1,53,84,576 वोट मिले। जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व वाली मौजूदा युवजन श्रमिक रायथू कांग्रेस पार्टी विधानसभा में सिर्फ 11 सीटों पर सिमट गई। वाईएसआरसीपी ने राज्य में 39.37 प्रतिशत वोट शेयर के साथ 1,32,84,134 वोट हासिल किए।

जानें कौन है दिव्या देशमुख? विश्व जूनियर शतरंज चैंपियनशिप का खिताब किया अपने नाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिव्या देशमुख ने गुरुवार को गांधीनगर में लड़कियों के वर्ग में वर्ल्ड जूनियर शतरंज चैंपियनशिप 2024 का खिताब जीता। उन्होंने अंतिम दौर में बुल्गारिया की बेलोस्लावा क्रस्टेवा को हराकर स्पष्ट चैंपियन के रूप में उभरी। चैंपियंस में भाग लेने वाले 27 देशों के 101 खिलाड़ियों में से, दिव्या और क्रस्टेवा रेटिंग के अनुसार टॉप 20 जूनियर लड़कियों में से तीन हैं। एक जीत ने तीसरे स्थान पर रहे भारतीय के लिए टॉप स्थान की गारंटी दी है। इंटरनेशनल मास्टर ने आखिरी राउंड में साथी भारतीय साची जैन को हराकर अपने अंकों की संख्या 9 कर ली है। 18 वर्षीय खिलाड़ी ने आर्मेनिया की मरियम मकर्चयन पर आधे अंक की बढ़त बना ली थी। दिव्या ने ओपन और लड़कियों के वर्ग में बचे हुए आखिरी राउंड में एकमात्र बढ़त बरकरार रखी। उसने 5.5 अंकों के साथ प्रबल पसंदीदा के रूप में शुरुआत की थी। वह पूरे टूर्नामेंट में अजेय रहीं और अपना पहला वर्ल्ड जूनियर बालिका शतरंज चैंपियनशिप खिताब जीता।

न्यूजीलैंड टी 20 वर्ल्ड कप के ग्रुप स्टेज से हुई बाहर

1987 के बाद पहली बार शर्मनाक स्थिति में कीवी टीम

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी20 वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड टीम ग्रुप स्टेज से बाहर हो गई है। लंबे अरसे बाद कीवी टीम का ये हाल हुआ है। इससे पहले साल 1987 में न्यूजीलैंड की टीम को जल्दी बाहर होना पड़ा था। तब से अब तक ये पहली बार हुआ है जब न्यूजीलैंड की टीम किसी वर्ल्ड कप में ग्रुप स्टेज से ही टूर्नामेंट से बाहर हो चुकी है। न्यूजीलैंड की टीम ग्रुप सी में और पांच टीमों में सबसे फिसड्डी साबित हुई है। कीवी टीम ने अपने शुरुआती दो मुकाबले गंवा दिए। वहीं पिछले साल वनडे वर्ल्ड कप की बात करें तो, न्यूजीलैंड की टीम का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा था। वर्ल्डकप में टीम का प्रदर्शन में निरंतरता रही थी। वह पिछले तीन वनडे वर्ल्ड कप और तीन टी20 वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल में पहुंचा था। लेकिन इस साल न्यूजीलैंड की किस्मत पहले ही मैच से खराब रही। अफगानिस्तान के खिलाफ पहले मैच में

न्यूजीलैंड के बल्लेबाज नहीं चल पाए। उसकी पूरी टीम 15.2 ओवर में 75 रन पर आउट हो गई जिससे उसे 84 रन से हार का सामना करना पड़ा। इससे उसका नेट रन रेट भी गड़बड़ा गया। एक से बढ़कर एक शानदार फील्डर्स से भरी न्यूजीलैंड की टीम ने इस मैच में कैचेज भी खूब टपकाए। पहले मैच में हार के बाद न्यूजीलैंड का अगला मुकाबला मेजबान वेस्टइंडीज से था। टूर्नामेंट में बने रहने के लिए कीवी टीम को ये मैच जीतना जरूरी था। लेकिन वेस्टइंडीज के खिलाफ तेज गेंदबाजों का जल्दी इस्तेमाल करने का केन विलियमसन का दांव उनकी टीम के लिए उलटा पड़ गया। मैच के 18 वें ओवर तक ट्रेंट बोल्ट (चार ओवर में 16 रन पर तीन विकेट) और लॉकी फर्ग्यूसन (चार ओवर में 27 रन विलियमसन को आखिरी दो ओवरों के लिए मध्यम तेज गेंदबाज डेरिल मिचेल और बाएं हाथ के स्पिनर मिचेल सैंटनर पर निर्भर रहना पड़ा। वेस्टइंडीज के बल्लेबाज शेरफेन रदरफोर्ड ने इसका फायदा उठाते हुए 39 गेंदों में 68 रन बनाए। इस दौरान उन्होंने आखिरी दो ओवर में चार छक्कों सहति 37 रन बनाए।

नडाल और अलकराज पेरिस ओलंपिक में टेनिस युगल में स्पेन का प्रतिनिधित्व करेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। राफेल नडाल और कार्लोस अलकराज पेरिस ओलंपिक में स्पेन के लिए युगल मुकाबले खेलेंगे। यह जानकारी स्पेन के टेनिस महासंघ ने बुधवार को दी। अलकराज ने रविवार को फ्रेंच ओपन जीता था जो इस 21 साल के खिलाड़ी का तीसरा ग्रैंडस्लैम खिताब है। इस खेल के सबसे बड़े दिग्गजों में शामिल 38 साल के नडाल के पास पहले से ही 22 ग्रैंडस्लैम खिताब के साथ एकल (2008) और युगल (2016 में मार्क लोपेज के साथ) में ओलंपिक स्वर्ण पदक हैं। ओलंपिक में टेनिस मुकाबलों को उन्हीं कोर्ट पर खेला जायेगा जो फ्रेंच ओपन की मेजबानी करते हैं। नडाल ने रिकॉर्ड 14 बार फ्रेंच ओपन का पुरुष एकल खिताब जीता है। अलकराज का यह पहला ओलंपिक होगा। उन्हें नडाल के उत्तराधिकारी के रूप में देखा जाता है। स्पेन के कप्तान डेविड फेरर ने टीम की घोषणा करते हुए कहा, ''राफा (नडाल) और कार्लोस (अलकराज) पेरिस में एक साथ खेलेंगे।'' अलकराज ने स्पेन के लिए ओलंपिक पदक जीतने को अपने करियर के शीर्ष लक्ष्यों में से एक निर्धारित किया है। उन्होंने फ्रेंच ओपन में जीत के बाद कहा था कि इस साल वह अपने विंबलडन खिताब का सफलतापूर्वक बचाव करने के बजाय पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण पदक को प्राथमिकता देंगे।

विश्व रैंकिंग में दूसरे स्थान पर काबिज अलकराज ने कहा, ''ओलंपिक खेल हर चार साल में होते हैं और यह एक विशेष टूर्नामेंट है जहां आप न केवल अपने लिए खेल रहे हैं, बल्कि एक देश के लिए खेल रहे हैं। स्पेन का प्रतिनिधित्व करते हुए मुझे लगता है कि इस साल मैं ओलंपिक स्वर्ण चुनूंगा।''

चैंपियंस ट्रॉफी को लेकर नहीं निकला कोई हल

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूएसए में चल रहे टी20 वर्ल्ड कप के बीच पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अधिकारियों और बीसीसीआई अधिकारियों के बीच मीटिंग हुई। ये मीटिंग चैंपियंस ट्रॉफी 2025 को लेकर विशेष मुलाकात की है। आईसीसी इवेंट का आयोजन पाकिस्तान की मेजबानी में अगले साल होने जा रहा है।

पड़ोसी देश इस टूर्नामेंट में भारत को शामिल करने के लिए उत्सुक है और इस विषय को लेकर ही अमेरिका में चर्चा की गई। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून की रिपोर्ट के अनुसार पीसीबी और बीसीसीआई के अधिकारियों ने टी20 वर्ल्ड कप के बीच न्यूयॉर्क में विशेष मुलाकात की है। इस मीटिंग में भारतीय टीम

के चैंपियन ट्रॉफी 2025 के लिए पाकिस्तान जानें के मुद्दे पर चर्चा हुई। लेकिन बीसीसीआई ने इस मामले में फिर से भारतीय सरकार के ऊपर आखिरी निर्णय छोड़ा है। वहीं पीसीबी के एक अधिकारी ने मीटिंग की पुष्टि करते हुए ये भी उम्मीद जताई है कि पूरा टूर्नामेंट पाकिस्तान में ही आयोजित किया जाएगा। गौरतलब है कि, पिछले साल एशिया कप में भारतीय टीम के कारण ही हाइब्रिड मोड अपनाया गया था और भारत के सभी मैच पाकिस्तान की जगह श्रीलंका में आयोजित कराए गए थे। पीसीबी ने 19 फरवरी से 9 मार्च तक चलने वाली चैंपियंस ट्रॉफी की तैयारियां शुरू कर दी हैं। रिपोर्ट के अनुसार टूर्नामेंट के लिए स्टेडियमों को अपग्रेड किया जा रहा है और काफी पैसा भी खर्च किया जा रहा है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड खास तौर से लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में निर्माण कार्य करा रहा है। साथ ही कराची और रावलपिंडी स्टेडियम में भी नवीनीकरण का काम किया जाएगा। इस साल के आखिर तक ये काम पूरा किया जाएगा। पीसीबी के ड्राफ्ट शेड्यूल में इन्हीं तीनों वेन्यू को टूर्नामेंट के लिए चुना गया है, जिसमें भारत के मुकाबले लाहौर में कराए जाने की तैयारी की गई है।

वेस्टइंडीज से हार के बाद हताश विलियम्सन ने टी20 क्रिकेट को 'चूहे बिल्ली का खेल' बताया

तारोबा (एजेंसी)। वेस्टइंडीज के खिलाफ तेज गेंदबाजों का जल्दी इस्तेमाल करने का केन विलियमसन का दांव उनकी टीम के लिए उलटा पड़ गया, जिससे न्यूजीलैंड के कप्तान ने आधुनिक टी20 को 'बिल्ली और चूहे का खेल' करार दिया। मैच के 18वें ओवर तक ट्रेंट बोल्ट (चार ओवर में 16 रन पर तीन विकेट) और लॉकी फर्ग्यूसन (चार ओवर में 27 रन पर दो विकेट) के ओवर खत्म हो गए और विलियमसन को आखिरी दो ओवरों के लिए मध्यम तेज गेंदबाज डेरिल मिशेल और बाएं हाथ के स्पिनर मिचेल सेंटनर पर निर्भर रहना पड़ा। वेस्टइंडीज के बल्लेबाज शेरफेन रदरफोर्ड ने इसका फायदा उठाते हुए 39 गेंदों में नाबाद 68 रन बनाए। इस दौरान उन्होंने आखिरी दो ओवर मे चार छक्कों सहित 37 रन बनाए। इससे मैच के नतीजे पर भी काफी फर्क पड़ा, क्योंकि वेस्टइंडीज ने नौ विकेट पर 112 रन से नौ विकेट पर 149 रन बनाए और फिर कीवी टीम को नौ विकेट पर 136 रन पर रोक दिया। विलियमसन ने मैच के बाद कहा, ''मुझे लगता है कि उन्होंने (मिशेल और सेंटनर) जो भी ओवर फेंके, उस पर रन बनने वाले थे। आपको इस तरह की चीजों से निपटना होता है।'' उन्होंने अफसोस जताते हुए कहा, ''मुझे लगता है कि टी20 क्रिकेट में आजकल जो टीमें काफी गहराई तक बल्लेबाजी कर रही हैं...आप हमेशा बिल्ली और चूहे का खेल खेलने की कोशिश कर रहे हैं।'' उन्होने कहा, '' मुख्य तेज गेंदबाजों का इस्तेमाल जल्दी करना अच्छा फैसला था लेकिन हमें इसका फायदा नहीं हुआ।

अफगानिस्तान ने पीएनजी को सात विकेट से हराया, सुपर आठ में पहली बार बनाई जगह

तारोबा (एजेंसी)। फजलहक फारूकी और नवीन उल हक की धारदार गेंदबाजी से अफगानिस्तान ने यहां पापुआ न्यू गिनी (पीएनजी) को सात विकेट से हराकर पहली बार टी20 विश्व कप के सुपर आठ चरण में जगह बनाई। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज फारूकी (16 रन पर तीन विकेट) और नवीन (चार रन पर दो विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने पीएनजी की टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए 19.5 ओवर में 95 रन पर सिमट गई। इसके जवाब में अफगानिस्तान ने शुरुआती झटकों से उबरते हुए 15.1 ओवर में तीन विकेट पर 101 रन बनाकर जीत दर्ज की। गुलबदिन नैब ने 36 गेंद में नाबाद 49 रन की पारी खेलकर टीम को लक्ष्य तक पहुंचाया। तीन मैच में तीन जीत से छह अंक के साथ अफगानिस्तान ग्रुप सी से सुपर आठ में जगह बनाने वाली दूसरी टीम बनी। सहमेजबान

वेस्टइंडीज (छह अंक) पहले ही अगले दौर में जगह बना चुका है। इसके साथ ही 2021 टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाने वाला न्यूजीलैंड प्रतियोगिता से बाहर हो गया। न्यूजीलैंड ने लगातार दो मैच गंवाए हैं। टीम अंक तालिका में अंतिम स्थान पर चल रही है और अभी उसके अंकों का खाता भी नहीं खुला है।

न्यूजीलैंड की टीम अपने अंतिम दो मैच अब युगांडा और पीएनजी के खिलाफ खेलेगी जो महज औपचारिकता के मुकाबले हैं। राशिद खान ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया जिसके बाद फारूकी ने अपने दूसरे ओवर में दो विकेट चटकाकर टीम को शानदार शुरुआत दिलाई। वह अब तक टूर्नामेंट में 11.2 ओवर में 42 रन देकर 12 विकेट चटका चुके हैं। फारूकी के तेज गेंदबाजी जोड़ीदार नवीन ने उनका अच्छा साथ निभाते हुए 2.5 ओवर में चार रन देकर दो विकेट चटकाए। सेमो कामिया के रन आउट के साथ 19.5 ओवर में पीएनजी की पारी सिमट गई। अफगानिस्तान ने अगर 25 अतिरक्त रन नहीं दिए होते तो पीएनजी की हालत और खराब होती। इसमें 13 रन वाइड के भी शामिल हैं। अफगानिस्तान के गेंदबाज टूर्नामेंट में शानदार फॉर्म में हैं और उनके खिलाफ अब तक एक बार भी 100 रन भी नहीं बने हैं। टीम ने इससे पहले युगांडा को 16 ओवर में 58 और न्यूजीलैंड को 15.2 ओवर में 75 रन पर समेटा था।

पीएनजी की ओर से किपलिन डोरिगा ने सर्वाधिक 27 रन बनाए। उनके अलावा सलामी बल्लेबाज टोरी ऊरा (11) और एलेई नाओ (13) ही दोहरे अंक में पहुंच पाए।

लियोनेल मेसी ने कहा, इंटर मियामी मेरा आखिरी क्लब होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिग्गज फुटबॉलर लियोनेल मेसी का अपने देश अर्जेंटीना के किसी क्लब से जुड़कर खेल को अलविदा कहने का कोई इरादा नहीं है और उन्होंने कहा कि इंटर मियामी उनका अंतिम क्लब होगा। अर्जेंटीना के कप्तान ने ईएसपीएन से कहा,''मुझे लगता है कि इंटर मियामी मेरा अंतिम क्लब होगा। आज की तारीख में मैं यही सोचता हूं कि यह मेरा अंतिम क्लब होने जा रहा है।'' मेसी अमेरिका में अपनी राष्ट्रीय टीम के साथ कोपा अमेरिका की तैयारी कर रहे हैं। अर्जेंटीना इस टूर्नामेंट का पिछला चैंपियन है। मेसी की अगुवाई में अर्जेंटीना ने 2022 में कतर में विश्व कप जीता था। बार्सिलोना के पूर्व स्टार मेसी का इंटर मियामी के साथ अनुबंध 2025 के सत्र के समापन तक है। उन्होंने कहा,''यूरोप से यहां आने का फैसला मुश्किल था। विश्व चैंपियन बनने से बहुत मदद मिली, और चीजों को अलग तरह से देखने का मौका भी मिला। लेकिन मैं इस बारे में नहीं सोचता। मैं खेल का आनंद लेने का प्रयास करता हूं।'' अर्जेंटीना के कई प्रशंसकों को उम्मीद थी कि मेसी अपने पहले क्लब न्यूवेल्स ओल्ड बॉयज़ की तरफ से खेलकर अपने करियर का अंत करेंगे।

पाकिस्तान, इंग्लैंड, श्रीलंका और न्यूजीलैंड के लिए सुपर-8 की राह नहीं आसान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की अमेरिका पर सात विकेट से जीत के बाद पाकिस्तानी फैंस को खुश होने का मौका मिल गया। ग्रुप ए के एक अहम मैच में भारत ने 111 रनों का पीछा करते हुए अमेरिका को मात दी। इसके साथ ही टीम इंडिया ने सुपर 8 के लिए क्वॉलीफाई कर लिया है। लेकिन अब पाकिस्तान, इंग्लैंड, श्रीलंका और न्यूजीलैंड जैसी टीमें अभी भी अगले दौर के लिए कैसे क्वालीफाई कर सकती हैं। अमेरिका पर भारत की जीत ने पाकिस्तान के लिए क्वालीफाई करने की उनकी संभावनाओं को काफी हद तक बढ़ा दिया है। बता दें कि कनाडा पर जीत के बाद पाक नेट रन रेट 0.191 हो गया था। जिससे उनके आगे बढ़ने की संभावना है, अगर वे आयरलैंड को हरा देते हैं और यूएसए अपने बचे मैच हार जाता है तो पाकिस्तान क्वालीफाई कर जाएगा। अगर आयरलैंड के खिलाफ मैच में बारिश के कारण मैच रद्द हुआ तो पाकिस्तान टी20 वर्ल्ड कप के दौड़ से बाहर हो जाएगा। ग्रुप बी में इंग्लैंड की स्थिति भी पाकिस्तान की तरह बनी हुई है। ये टीम भी इस समय दूसरी टीमों पर निर्भर है। इंग्लैंड को ओमान और नामीबिया के खिलाफ अपने आखिरी दो मैच जीतने की जरूरत है और उम्मीद है कि स्कॉटलैंड 15 जून को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपना

आखिरी मैच हार जाए। तो इस तरह इंग्लैंड सुपर-8 के लिए क्वॉलीफाई कर लेगी। बांग्लादेश के खिलाफ मिली श्रीलंका को मामूली हार ने उनसको सुपर-8 में एंट्री करने के लिए काफी हद तक प्रभावित किया है। अब अपनी लाज बचाने के लिए श्रीलंका को नेपाल और नीदरलैंड के खिलाफ अपने शेष मुकाबलों में हर हाल में जीत दर्ज करनी होगी और उम्मीद करनी होगी कि बांग्लादेश अपने शेष दो मैचों में कम से कम एक मैच हार जाए। न्यूजीलैंड को आज वेस्टइंडीज के खिलाफ करारी हार का सामना करना पड़ा। इससे न्यूजीलैंड का नेट रन रेट 2.425 पर पहुंच गया है। जिसके बाद वेस्टइंडीज ने सुपर-8 का टिकट कटवा लिया है। जबकि अफगानिस्तान का नेट रन रेट 5.225 गया है। उसने अपने दोनों मैच कंबाइंड टोटल 209 रनों से जीते हैं, वेस्टइंडीज और अफगानिस्तान दोनों ने युगांडा को 120 से ज्यादा रनों से हराया है। यहां से न्यूजीलैंड का क्वालीफिकेशन का रास्ता बहुत मुश्किल लग रहा है।

कनाडा के खिलाफ कोहली की फॉर्म पर रहेंगी नजरें, बारिश के खलल की संभावना

लॉडरहिल (एजेंसी)। भारत टी20 विश्व कप के अपने अंतिम ग्रुप ए मैच में शनिवार को यहां जब कनाडा से भिड़ेगा तो स्टार बल्लेबाज विराट कोहली के पिछले कुछ मैचों में कम स्कोर उसके लिए चिंता की बात होंगे। टीम को साथ ही उम्मीद होगी कि मुकाबले में बारिश का खलल नहीं पड़ेगा क्योंकि फ्लोरिडा के कई हिस्सों में लगातार बारिश हो रही है। तीन मैच में तीन जीत के साथ भारत पहले ही सुपर आठ चरण में जगह बना चुका है जिसके सभी मुकाबले वेस्टइंडीज में होंगे।

आईपीएल में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू की ओर से 150 से अधिक के स्ट्राइक रेट से 700 से अधिक रन बनाने के बाद कोहली टी20 विश्व कप में आए थे लेकिन शुरुआती मुकाबलों में अच्छा प्रदर्शन करने में नाकाम रहे। वह अब अब तीन मैच में 1.66 के औसत से पांच ही रन बना पाए हैं जिसमें अमेरिका के खिलाफ 'गोल्डन डक' (पहली गेंद पर खाता खोले बिना आउट होना) भी शामिल है। उम्मीद है कि वह एक बार फिर आईसीसी प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन करेंगे जो 13 साल बाद भारत के लिए एक और आईसीसी खिताब जीतने का उनका संभवत: आखिरी मौका है। भारतीय टीम न्यूयॉर्क से 1850 किमी की यात्रा करके

फ्लोरिडा पहुंची है और उम्मीद है कि शहर बदलने के साथ कोहली को भाग्य भी बदलेगा। ब्रोवार्ड काउंटी स्टेडियम की पिच से गेंदबाजों को शायद न्यूयॉर्क जितनी मदद नहीं मिले जहां की पिच पर असमान उछाल था और धीमा आउटफील्ड के कारण क्रिकेट से अधिक मैदान और पिच की चर्चा हो रही थी। कोहली के ऊपर से हालांकि इस तथ्य से दबाव कुछ कम होगा कि उनके खराब प्रदर्शन का असर टीम के प्रदर्शन पर नहीं पड़ा है। कप्तान रोहित शर्मा के साथ पारी का आगाज कर रहे कोहली के जल्दी आउट होने से हालांकि टीम को अच्छी शुरुआत नहीं मिल रही और बाद में आने वाले बल्लेबाजों पर दबाव बन रहा है। ऋषभ पंत और सूर्यकुमार यादव जैसे बल्लेबाज हालांकि कोहली के खराब प्रदर्शन की भरपाई करने में काफी हद तक सफल रहे हैं। पंत ने आयरलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ क्रमश: 36 और 42 रन की पारियां खेलकर इन दोनों मैच में भारत की जीत में अहम भूमिका निभाई।

सूर्यकुमार यादव ने टूर्नामेंट में खराब शुरुआत से उबरते हुए अमेरिका के खिलाफ महत्वपूर्ण अर्धशतक जड़ा। शिवम दुबे ने भी सह मेजबान के खिलाफ 35 गेंद में 31 रन बनाए जिससे संजू सैमसन और यशस्वी जायसवाल पर उन्हें एक बार फिर तरजीह मिलने की उम्मीद है। अगर भारत जायसवाल को मौका देता है तो वह पारी का आगाज करेंगे और ऐसे में कोहली को अपने तीसरे नंबर पर लौटना होगा।

पुलिस के हत्थे चढ़ा राशन चोर गिरोह

6 गिरफ्तार 4 फरार अब तक सतना-रीवा में 3 दर्जन से ज्यादा वारदातों को दे चुके अंजाम

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सतना पुलिस ने शासकीय उचित मूल्य की दुकानों से राशन चोरी करने वाले गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। हालांकि 4 आरोपी अभी फरार हैं। गिरोह अब तक सतना, रीवा जिले में 3 दर्जन से ज्यादा वारदातों को अंजाम दे चुका है।

सतना की कोटर थाना पुलिस ने पीडीएस की दुकानों से गरीबों के हक का सरकारी अनाज चुराने वाले गिरोह के 6 सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों में अमर पटेल उर्फगुरु पिता रामराज पटेल (22) निवासी ढेकहा हरिजन बस्ती वार्ड क्र.05 थाना सिविल लाइन्स जिला रीवा,अंकित साहू पिता राजरुप साहू (19) निवासी धरी मोहरवा थाना चोरहटा जिला रीवा (म.प्र.), आशीष सोधिया उर्फ अरुण पिता राजेन्द्र सोधिया उम्र (19) निवासी अमोखर थाना मउगंज जिला मउगंज (म.प्र.) हाल ढेकहा,अनुराग उर्फ सोमू शुक्ला पिता अशोक शुक्ला (24) नि.बरवाह थाना चोरहटा जिला रीवा, अनूप उर्फफूल शुक्ला पिता अशोक शुक्ला (32) निवासी बरवाह थाना चोरहटा जिला रीवा व रमेश द्विवेदी पिता भगवानदीन द्विवेदी (50) निवासी लालापुर थाना नयागांव चित्रकूट (म.प्र.) हाल बोदाबाग परौहा मोड़ रीवा शामिल हैं।

इनके अलावा चार आरोपी शिवम पटेल, अमलेश उर्फ बब्बू पटेल, संतोष पटेल एवं राजेश पटेल अभी फरार हैं। पुलिस ने बताया कि समिति प्रबन्धक बलिकरण गौतम पिता श्रीधर गौतम निवासी खम्हरिया थाना कोटर ने ग्राम खम्हरिया कक शासकीय उचित मूल्य की दुकान से 40 कुंतल चावल, ग्राम गोरइया से 80 बोरी चावल एवं मोहम्मद रसीद खान पिता मोहम्मद गुलजार निवासी ग्राम गोरइया थाना कोटर की दुकान से 80 बोरी चावल चोरी हो गया था।

पुलिस ने बताया कि संदेह के आधार पर अमर पटेल, अंकित साहू, आशीष सोधिया उर्फअरुण, रमेश द्विवेदी, अमलेश उर्फ बब्बू पटेल के साथ मिलकर थाना कोटर के क्षेत्र तथा सतना शहर के अलावा नागौद, सिंहपुर, सभापुर रामपुर आदि स्थानों में लगातार चोरी कर रहा है।

अनुराग उर्फ सोमू शुक्ला, अनूप उर्फफूल शुक्ला एवं रमेश द्विवेदी को पकड़ कर उनसे पूछताछ की गई।

आरोपियों ने बताया कि राशन चोरी का सबसे बड़ा सरगना संतोष पटेल निवासी ढेकहा है। उसके पास 4 पिकअप वाहन तथा उसके साथी अनूप शुक्ला व अनुराग शुक्ला के पास 1-1 पिकअप वाहन है। सरगना संतोष पटेल वर्ष 2014 से लगातार सतना एवं रीवा जिले मे चोरी की वारदातों को अंजाम दे रहा है।

अभी तक वह अपने भाई अमर पटेल, राजेश पटेल, तथा साथी अनुराग शुक्ला, अनूप शुक्ला, अंकित साहू, आशीष सोधिया उर्फअरुण, रमेश द्विवेदी, अमलेश उर्फबब्बू पटेल के साथ मिलकर थाना कोटर के क्षेत्र तथा सतना शहर के अलावा नागौद, सिंहपुर, सभापुर रामपुर आदि स्थानों में लगातार चोरी कर रहा है।

भुमका जलाशय का जनभागीदारी से किया गया गहरीकरण

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। 'जल ही जीवन है' के उद्देश्य को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा जल स्त्रोतों के संरक्षण और संवर्धन के लिये 'जल गंगा संवर्धन' अभियान चलाया जा रहा है। यह अभियान विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून से लगातार संचालित है।

सतना और मैहर जिले में भी जल गंगा संवर्धन अभियान निरंतर संचालित किया जा रहा है। अभियान में ग्रामीण विकास विभाग, जन अभियान परिषद, स्वयंसेवी संस्थाओं तथा जन सहयोग से जल संरक्षण तथा संवर्धन के कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्रम में सोहावल विकासखंड की ग्राम पंचायत भुमकहर में भुमका जलाशय का जनभागीदारी से गहरीकरण का कार्य कराया गया है।

ग्राम पंचायत के उप सरपंच राजेंद्र डोहर ने बताया कि जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत ग्राम पंचायत अंतर्गत जल संरचनाओं के जीर्णोद्धार का कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में भुमका जलाशय के गहरीकरण का कार्य पंचायत कर्मियों और स्थानीयजनों के सहयोग से किया गया है। जलाशय की साफ-सफाई कर एवं रंगाई-पुताई का कार्य कराकर इसे नया रुप दिया गया है।

रोगी कल्याण समिति की बैठक में उपचार सुविधायें बढ़ाने पर चर्चा

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी की अध्यक्षता में संपन्न चिकित्सालय मैहर (सिविल अस्पताल) की रोगी कल्याण समिति की बैठक में भर्ती मरीजों की चिकित्सा सुविधाओं के उन्नयन एवं बेहतर उपचार व्यवस्थाओं के बारे में निर्णय लिये गये। इस अवसर पर कलेक्टर मैहर रानी बाटड, एसडीएम मैहर विकास सिंह, सीएमएचओ डॉ एलके तिवारी, डॉ वीके गौतम, संतोष सोनी एवं बीएमओ उपस्थित रहे।

रोगी कल्याण समिति की बैठक में रोगी कल्याण समिति सिविल अस्पताल मैहर की निर्मित दुकानों के विरुद्ध पारित न्यायालय उपभोक्ता फोरम सतना के आदेश के परिपालन के संबंध में चर्चा की गई। इसी प्रकार मैहर अस्पताल में रोगियों की सुविधा के लिये पानी की उचित व्यवस्था, पार्किंग, कैंटीन की स्थापना, अस्पताल में सीटी स्कैन, लिफ्ट संधारण और ओपीडी के संचालन के लिये आउट सोर्सिंग से ऑपरेटर रखे जाने पर चर्चा की गई। अस्पताल के पुराने पलंग की मरम्मत, नये गद्दों की व्यवस्था, नवीन भवन में एनआरसी के लिये 3 नग एयर कंडीशनर खरीदने के संबंध में निर्णय लिये गये।

नगरीय क्षेत्रों में 15 जुलाई से पौधरोपण अभियान, शहरी क्षेत्रों में 1.75 लाख पौधरोपण होगा

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। प्रदेश के सभी नगरीय क्षेत्रों में 15 जुलाई से 15 सितम्बर तक व्यापक पौधरोपण अभियान चलाया जायेगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पौधरोपण को बढ़ावा देने के निर्देश दिये हैं। इस उद्देश्य से नगरीय क्षेत्र में पूरे 2 माह पौधरोपण अभियान चलेगा। शहरी क्षेत्रों में एक करोड़ 75 लाख पौधों को रोपा जायेगा। राज्य शासन ने नगरीय विकास एवं आवास विभाग से सभी कलेक्टर्स को निर्देश जारी किये हैं। सभी जिला कलेक्टर के नेतृत्व में अन्य विभागों के साथ मिलकर पौधरोपण अभियान चलाया जाएगा। वर्षाकाल में अधिक से अधिक पौधरोपण करने के निर्देश दिये गये हैं। नगर निगम इंदौर एवं भोपाल में 15-15 लाख, नगर निगम ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन में 10-10 लाख और शेष 11 नगर निगम में 5-5 लाख पौधे रोपे जायेंगे। इसी प्रकार एक लाख एवं इससे अधिक जनसंख्या की 17 नगर पालिकाओं में एक-एक लाख, एक लाख से कम जनसंख्या की 82 नगर पालिका में 15-15 हजार और 298 नगर परिषद में 10-10 हजार पौधे लगाये जायेंगे।

नगरीय निकायों द्वारा पौधरोपण का कार्य नगरीय निकाय की स्वयं की हरित क्षेत्र के लिये आरक्षित भूमि, अन्य शासकीय भूमि तथा निजी कॉलोनियों में हरित क्षेत्र के लिये आरक्षित भूमि में किया जाएगा। निजी कॉलोनियों में पौधरोपण जन-सहयोग से होगा। निकाय द्वारा पौधों की आपूर्ति नगरीय निकाय एवं वन विभाग की नर्सरी तथा स्थानीय रूप से उपलब्ध पौधों से की जायेगी।

अभियान में छायादार और औषधीय प्रजाति के पौधों का चयन करने को कहा गया है। सजावटी एवं हेज प्लांट का उपयोग नहीं होगा। निकायों द्वारा किये जाने वाले पौधरोपण की सुरक्षा का उचित प्रबंध करने को भी कहा गया है। निश्चित अंतराल एवं आवश्यकतानुसार पानी देने की व्यवस्था के भी निर्देश हैं। पौधों की निगरानी एवं रख-रखाव में निकाय द्वारा गैर सरकारी संस्थाओं और आम नागरिकों से सहयोग लेने की अपेक्षा की गई है।

पौधरोपण कार्य वन, उद्यानिकी तथा नगरीय निकाय के स्वयं की उद्यानिकी शाखा के तकनीकी मार्ग दर्शन में किया जायेगा। अभियान में स्मृति वन, नक्षत्र वन, संस्कृति वन विकसित करने को प्रोत्साहित करने को कहा गया है। निकायों द्वारा वाटर ट्रीटमेंट प्लांट, सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट तथा सांइन्टिफिक लैंडफिल परिसर में पौधरोपण का कार्य अनिवार्य रूप से करने को कहा गया है। साथ ही जन-अभियान परिषद, स्वयंसेवी संस्थाओं, स्व-सहायता समूह, एनएसएस, एससीसी तथा स्कूल, कॉलेज के छात्र-छात्राओं को भी इस अभियान से जोड़ने के निर्देश दिये गये हैं।

वर्तमान में नगरीय निकायों में अमृत 2.0 योजना अंतर्गत हरित क्षेत्रों का विकास कार्य प्रचलित है। पौधरोपण अभियान में वित्तीय व्यवस्था अमृत 2.0 योजना अंतर्गत उपलब्ध राशि, नगरीय निकाय में उपलब्ध स्वयं के स्त्रोत से तथा जन-सहयोग से की जायेगी। इसके अलावा भी प्रति वर्ष नगरीय निकायों द्वारा वर्षाकाल पौधरोपण का कार्य किया जाता है।

सांसद ने जल जीवन मिषन के कार्यों का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सांसद गणेश सिंह ने शुक्रवार को मैहर जिले के भ्रमण के दौरान रामनगर विकासखंड के मार्कण्डेय मे जल जीवन मिशन के तहत किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया। सांसद सिंह ने मार्कण्डेय घाट पहुंचकर जल जीवन मिशन के कार्यों की प्रगति के संबंध में अधिकारियों से जानकारी ली। उन्होने जल जीवन मिशन के अधिकारियों को कार्य में गति लाने के निर्देश दिए। सांसद सिंह ने कहा कि जिन ब्लॉकों के गांवों में पानी नहीं पहुंच रहा हैं, वहां जल्द से जल्द पानी पहुंचाने का काम किया जाये। इस अवसर पर सांसद सिंह ने मार्कण्डेय परिसर मे वृक्षारोपण भी किया। निरीक्षण के दौरान एसडीएम रामनगर डॉ आरती सिंह, थाना प्रभारी टीकाराम कुर्मी, नायब तहसीलदार ललित धार्वे, पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष रामसुशील पटेल, आशुतोष गुप्ता, संविदाकार कालिका प्रसाद पटेल उपस्थित रहे।

आज तीन घंटे से अधिक बिजली कटौती

सभी 33 केवी फीडर बंद रहेंगे, जानें किन क्षेत्रों में आपूर्ति ठप रहेगी

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सतना में कल यानी शनिवार की सुबह से बिजली गुल रहेगी। पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी की तरफसे दी गई सूचना के अनुसार, शनिवार को पावर ट्रांसमिशन कंपनी द्वारा 132 केवी सब स्टेशन पतेरी में मेंटेनेंस कार्य किया जाना है।

जिसके कारण शहर के सभी 33 केवी फीडर से जुड़े सब स्टेशनों से बिजली सप्लाई सुबह 7 से 10 बजे तक ठप रहेगी।

इन क्षेत्रों में बंद रहेगी सप्लाई: पावर ट्रांसमिशन कंपनी के मेंटेनेंस के कारण पतेरी , विराट नगर, उमरी, आकाश गंगा नगर, अर्जुन नगर, जवाहर नगर, मंदाकिनी विहार, बगहा, सिविल लाइन, राजेन्द्र नगर, धवारी , प्रेम नगर, निशांत विहार, कोलगवा, पौराणिक टोला, कोर्ट परिसर, प्रभात विहार, भरहुत नगर, फ्रैंड्स कालोनी, बांधवगढ़ कॉलोनी, बिरला कॉलोनी, औद्योगिक क्षेत्र, बस स्टेंड, रीवा रोड, मुख्तियार गंज, महाराणा प्रताप नगर, बरदाडीह, बम्हनगवां ,शिव कॉलोनी, सिद्धार्थ नगर, सिंधी कैम्प चाणक्यपुरी कालोनी ,आदर्श नगर, घूरडांग संतोषी विहार कॉलोनी आदि क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति प्रभावित रहेगी।

बिजली कम्पनी ने उपभोक्ताओं से सहयोग की अपेक्षा की है।

घरेलू एवं कृषि उपभोक्ताओं को बिजली बिलों में राहत देने 24 हजार 420 करोड़ रूपये की सब्सिडी

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। प्रदेश के घरेलू एवं कृषि उपभोक्ताओं को विगत वर्षों की तरह वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिये लागू टैरिफदरों में राहत देने के लिये बिजली कंपनियों को अनुमानित 24 हजार 420 करोड़ 8 लाख रूपये की सब्सिडी देने का निर्णय राज्य शासन द्वारा लिया गया है। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि यह सब्सिडी अटल गृह ज्योति योजना, अटल कृषि ज्योति योजना टैरिफसब्सिडी और नि:शुल्क विद्युत प्रदाय योजना में दी जायेगी।

राज्य शासन के निर्णयानुसार फ्लैट दर पर 10 हार्सपावर तक की क्षमता वाले स्थायी कृषि उपभोक्ताओं से मात्र 750 रूपये प्रति हार्सपावर प्रति वर्ष लिये जाने के एवज में 11 हजार 943 करोड़ 98 लाख रूपये की सब्सिडी दी जायेगी। इसी तरह प्लेट दर पर 10 हार्सपावर से अधिक क्षमता से स्थाई कृषि उपभोक्ताओं से 1500 रूपये प्रति हार्सपावर प्रति वर्ष लिये जाने की एवज में 969 करोड़ 31 लाख रूपये, 10 हार्सपावर तक की क्षमता वाले मीटर युक्त स्थाई कृषि पंप उपभोक्ताओं के लिये 50 करोड़ 63 लाख, 10 हार्सपावर से अधिक क्षमता वाले मीटर युक्त स्थाई कृषि पंप उपभोक्ताओं के लिये 3 करोड़ 22 लाख, अस्थाई कृषि पंप संयोजन के लिये 371 करोड़ 49 लाख रूपये, एक हेक्टेयर तक की भूमि वाले 5 हार्सपावर तक के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के स्थाई कृषि पंप उपभोक्ताओं को नि:शुल्क विद्युत प्रदाय के लिये 5009 करोड़ 73 लाख रूपये, अटल गृह ज्योति योजना के अंतर्गत 150 यूनिट तक की मासिक खपत वाले घरेलू उपभोक्ताओं को प्रथम 100 यूनिट की मासिक खपत पर अधिकतम 100 रूपये के बिल अनुसार बिजली देने के एवज में 5866 करोड़ 26 लाख रूपये, अटल गृह ज्योति योजना में गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वाले अनुसूचित जाति एवं जनजाति के घरेलू उपभोक्ताओं को केवल 25 रूपये प्रति माह की दर से 30 यूनिट बिजली देने के एवज में 36 लाख रूपये और उच्च दाब उद्वहन/समूह सिंचाई उपभोक्ताओं को वार्षिक न्यूनतम प्रभार से छूट तथा ऊर्जा प्रभार में 190 पैसे प्रति यूनिट की छूट देने के लिये 205 करोड़ 10 लाख रूपये की सब्सिडी देने का प्रावधान किया गया है।

अग्निवीर स्कीम के तहत सेना में रिलेशन भर्ती 1 से 4 जुलाई तक जबलपुर में

सतना निप्र। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी सतना ने बताया कि भारतीय सेना में अग्निवीर स्कीम के तहत रिलेशन भर्ती 1 जुलाई से 4 जुलाई तक सिगनल ट्रेनिंग सेंटर जबलपुर में आयोजित की जा रही है। उन्होने बताया कि भर्ती कार्यक्रम में सेवारत सैनिकों, भूतपूर्व सैनिकों, युद्ध में शहीद विधवाओं अथवा विधवाओं के बच्चें एवं सगे भाईयों की भर्ती की जायेगी।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम 21 को

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मध्यप्रदेश शासन के निर्देशानुसार 21 जून 2024 को दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक योग कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। शासन के निर्देशानुसार प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पूरे प्रदेश में सभी जिलों, विकासखंडों, पंचायत स्तर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की गतिविधियां वृहद स्तर पर आयोजित की जायेंगी। इन कार्यक्रमों में शासकीय, अशासकीय विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के अलावा सभी शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थी भाग लेंगे। इसके साथ ही योग संस्थानों, एनएसएस, पुलिसकर्मियों, विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों, शासकीय सेवकों, स्वयंसेवी संस्थाओं, वाणिज्यिक एवं औद्योगिक संस्थानों की भी सहभागिता सुनिश्चित की जायेगी।

संपूर्ण प्रदेश में एक साथ, एक समय पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का आयोजित किया जायेगा। आयोजन के संबंध में जारी समय-सारणी के अनुसार प्रात: 6 बजे अतिथि आगमन, प्रात: 6.02 बजे अतिथियों का उद्बोधन, प्रात: 6:10 से मुख्य कार्यक्रम का सीधा प्रसारण, प्रात: 7 बजे से 7:45 तक सामान्य योग अभ्यास कार्यक्रम प्रात: होगा।

जिसका सीधा प्रसारण दूरदर्शन एवं आकाशवाणी रेडियो के माध्यम से किया जायेगा। कार्यक्रम का नोडल विभाग आयुष विभाग को बनाया गया है। सतना में योग दिवस का कार्यक्रम शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय व्यकंट क्रमांक-1 सतना के पीछे के मैदान में आयोजित होगा।

मैहर जिले के एक लाख 19 हजार से अधिक बच्चों को पिलाई जायेगी पोलियो की खुराक

पल्स पोलियो अभियान की समीक्षा बैठक

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर जिले में 23 जून को सघन पल्स पोलियो अभियान चलाया जायेगा। अभियान के तहत जिले में पांच वर्ष की उम्र तक के बच्चों को दो बूंद पोलियो की दवा पिलाई जायेगी। जिसमें मैहर विकासखंड के 61 हजार 22, अमरपाटन विकासखंड के 29 हजार 114 एवं रामनगर विकासखंड के 29 हजार 478 सहित कुल 1 लाख 19 हजार 614 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य रखा गया है। इस संबंध में गुरुवार को कलेक्ट्रेट सभागार मैहर में

कलेक्टर मैहर रानी बाटड की अध्यक्षता में जिला टास्क फोर्स की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में सीएमएचओ डॉ एलके तिवारी, जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ सुचित्रा अग्रवाल सहित सभी बीएमओ एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ तिवारी ने बताया कि अभियान की सफ्लता के लिये कुल 959 बूथ बनाये गये हैं। इनमें मैहर विकासखंड अंतर्गत 430, अमरपाटन अंतर्गत 249 एवं रामनगर अंतर्गत 280 बूथ बनाये गये हैं। उन्होने बताया कि ट्रांजिट बूथ की संख्या 38 है। अभियान वाले दिन 12 मोबाइल टीम सक्रिय रहेंगी। टीकाकरण के कार्य के लिये 2018 कर्मचारियों एवं 108 सुपरवाइजर्स की ड्यूटी लगाई गई है।

कलेक्टर बाटड ने अभियान की तैयारियों की समीक्षा करते हुये कहा कि पोलियो एक गंभीर वायरस है। किसी भी एक बच्चें का टीकाकरण से छूटना भी बीमारी फैलाने के लिये पर्याप्त है। हमें अत्यन्त सावधान एवं जागरूक रहने की आवश्यकता है।

0-5 वर्ष का कोई भी बच्चा पोलियो की दवा पीने से वंचित न रहे। टीकाकरण के कार्य में तैनात वैक्सीनेटर्स को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान करें। साथ ही टीकाकरण के कार्य में संबद्ध विभागों से समन्वय बनाकर अभियान को सफ्ल बनाना सुनिश्चित करें।

सुरक्षा जवान एवं सुपरवाइजर भर्ती शिविर 19 से 28 जून तक

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। जिला रोजगार कार्यालय एवं शासकीय आईटीआई सतना द्वारा सतना और मैहर जिले की आईटीआई कैंपस में 19 जून से 28 जून तक सुरक्षा जवान एवं सुपरवाइजर भर्ती के लिये एक दिवसीय प्लेसमेंट ड्राइव आयोजित की जा रही है। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि 19 जून को शासकीय महाविद्यालय रामपुर बघेलान, 20 जून को शासकीय आईटीआई रामनगर, 21 जून को शासकीय आईटीआई नागौद, 22 जून को शासकीय आईटीआई उचेहरा में एजाइल सिक्योरिटी फोर्स ट्रेनिंग एकेडमी द्वारा सुरक्षा जवान एवं सुपरवाइजर पदों पर भर्ती के लिये प्लेसमेंट के दौरान पुरुष आवेदकों का चयन किया जायेगा। इसी प्रकार 25 जून को शासकीय आईटीआई मैहर, 26 जून को शासकीय आईटीआई अमरपाटन, 27 जून को शासकीय आईटीआई बिरसिंहपुर एवं 28 जून को शासकीय आईटीआई सतना में प्लेसमेंट ड्राइव आयोजित की जायेगी।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।